मंत्र·तंत्र·यंत्र
विज्ञान
गजाननं भूत गणादि सेवितं कपीत्थ जम्बू फल चारु भक्षणम् ।
उमा सुतं शोक विनाश कारकं नमामि विघ्नेश्वर पाद पंकजम् ॥

सम्पादकीय

जीवन का अब तक का सबसे कठिन कार्य पत्रिका का सम्पादन करना रहा है, इस कार्य को जब मुझे और मेरे कुछ सहयोगियों को सौंपा तो मुझे लगा कि मैंने बहुत कुछ प्राप्त कर लिया है, यह कार्य जो मेरे लिए परम सौभाग्य है, मैं निभाता चल रहा हूं, इसमें न तो मेरी बुद्धि है, न मेरा ज्ञान है, और न मैं स्वयं कुछ विशेष हूं, जब गुरुदेव ने मुझे अपना शिष्य स्वीकार कर लिया था तब मैंने अपना शरीर, मन, बुद्धि सब कुछ उन्हें सौंप दिया था, मैंने पूज्य प्रभु से कहा कि मेरे अब तक की यह जीवन पुस्तिका राग, द्वेष, चिन्ता, पीड़ा के बदरंगों से रंगी है, इस जीवन पुस्तिका में अब आगे आपके ही हस्ताक्षर होंगे, आपके ही वचन होंगे।

ग्यारह वर्षों की यात्रा अनवरत चलती रही है, कुछ कांटे भी मिले तो पुष्पों की बरसात भी हुई, सब कुछ तीव्र रूप से आगे ही गतिमान होता रहा है, यह सब कुछ पूज्य प्रभु के शिष्यों की समर्पित भावनाओं से संभव हो सका है, उन सभी को हमारा नमन है।

मेरा सौभाग्य है कि मुझे गुरुदेव का इतना अधिक सान्निध्य प्राप्त हो रहा है, गुरु अमृत वचनों को मैं अपने सहयोगियों के साथ किस रूप में प्रगट करने में समर्थ हुआ हूं, इसका निर्णय तो आप पाठक, साधक और शिष्य ही करेंगे, हम लोगों से गल्तियां भी हुई हैं, पूज्य गुरुदेव ने हमारी गलतियों को देखा, लेकिन हमें टोका नहीं, उनका कथन है कि तुम्हें टोकने का कार्य केवल पत्रिका के सदस्य ही करेंगे, यह उनका अधिकार क्षेत्र है।

पत्रिका प्रकाशन का यह वर्ष कैसा रहा, यह आप ही बतायें, हमें हमारी कमियों से अवगत कराएं, जो भी न्यूनताएं रही हैं, वे अवश्य ही हमारे प्रयासों की कमी के कारण ही रही होंगी, हम लोग आपसे अनुरोध करते हैं कि जिस गुरु **परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द महाराज** के हम शिष्य हैं, उन्हीं के आप भी शिष्य हैं तथा हम और आप गुरु भाई हैं, दोनों के अधिकार एक समान हैं, दोनों पर गुरु कृपा का वरदहस्त है और हम सब आपस में अपनी जिम्मेदारियां बिना हिचक बांट सकते हैं।

ये जिम्मेदारियां केवल पत्रिका सदस्यों की वृद्धि तक ही सीमित नहीं है, इस कार्य का संकल्प तो हर शिष्य ने ले रखा है, गुरुदेव तो थोड़े से शब्दों में बहुत कुछ कह जाते हैं, हम सब का यह प्रयास होना चाहिए कि पूज्य श्री जिस प्रकार से देश-विदेश में इस महान ज्ञान का स्वरूप चाहते हैं यह कार्य उसी स्वरूप में सम्पन्न हो, हर स्थान पर 'निखिलेश्वरानन्द ज्ञान धाम' **बनें, मन्त्र, तन्त्र से सम्बन्धित साधनाएं सम्पन्न हों, विशेष आयोजन होते रहें, यह कार्य हम सब को करना है,** 'निखिल पंथ' **पर चलना है, जीवन का विराट स्वरूप और लक्ष्य पहचानना है, प्राप्त करना है।** ●

वर्ष-११

अंक-१२

दिसम्बर-१९९१
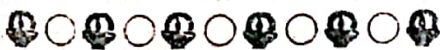
। सम्पर्क ।

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

डॉ० श्रीमाली मार्ग,

हाईकोर्ट कालोनी,

जोधपुर-३४२००१ (राज०)

टेलीफोन । ३२२०९

आनो भद्राः क्रतयो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोम्मुखी उन्नति प्रगति और
भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

प्रार्थना

प्रियं मा कृणु देवेषु प्रियं राजसु नस्कृधि ।
प्रियं सर्वस्य पश्यत उत शूद्रे, उत आर्ये ।।

'चाहे संसार का कोई भी प्राणी क्यों न हो वह हम सभी का प्रेमी बने, समस्त विश्व में हम सब का परस्पर प्रेम सम्बन्ध स्थापित हो और किसी से भी हमारा कोई विरोध न हो ।'

साक्षीभाव

जाग्रत कर ही, पहिचान पाओगे

सब कुछ

मुझसे बार-बार यह पूछा जाता है कि गुरुदेव ! हम अपने जीवन में मुक्त कैसे हो सकते हैं ? हम जीवन में तो हर तरह से बंधन ही बंधन में जकड़े हुए हैं, जन्म से आज तक इन बन्धनों से मुक्ति नहीं मिल पाई है, बचपन में शिक्षा का बंधन था, दिन-रात पढ़ाई की चिन्ता लगी रहती थी, क्योंकि हमें यही बताया गया कि जीवन में श्रेष्ठ पद प्राप्त करना है तो पढ़ना पड़ेगा, फिर पढ़ाई के पश्चात् नौकरी की तलाश, उसके लिए जगह-जगह भटक कर नौकरी या व्यापार शुरु किया तो हजार जगह हाथा-जोड़ी, समस्याएं, यह बन्धन चालू ही था कि विवाह हो गया, अब इस विवाह को बन्धन मानूं या कुछ और, क्या जीवन में सुख यही है ? अब तक के जीवन के सारे बन्धन अभी तक मेरे साथ ही चल रहे हैं, अब भाइयों को अच्छी शिक्षा देनी है, मुझे अपना मकान बनाना है, बच्चों के लिए संचय करना है, माता-पिता की सेवा करनी है, समाज में अपना सिर ऊंचा रखने के लिए और अधिक पैसा कमाना है, क्या मेरा जीवन श्रेष्ठ है ? क्या इसमें कुछ विशेष बात है या नहीं ?

ये प्रश्न एक-दो शिष्यों के नहीं, अपितु हर दूसरे शिष्य का रहता है, इसमें इन लोगों का कोई दोष ही नहीं है, इन्हें यही सिखाया गया है कि जीवन का तात्पर्य केवल इतना ही है कि एक बन्धन का भार, कसावट थोड़ी हल्की पड़े तो दूसरा बन्धन बांध दो, यदि आप इस बन्धन से छूटना चाहेंगे तो आपका यह तथाकथित समाज कमर कसकर तैयार खड़ा है, नये बन्धनों को तैयार कर, आखिर छूटकर जाओगे कहां ? तुम्हारे लिए ये ही गिने-चुने लोग हैं, यही समाज है ।

तोता अपनी कोई विशेष बोली नहीं रखता, उसे जो सिखा दिया जाता है वह बोलता रहता है, उसे राम-राम सिखाओ तो वह राम-राम बोलेगा, उसे गाली सिखाओ तो वह गाली बोलेगा, इसमें दोष तोते का नहीं है, उसको सिखाने वाले व्यक्ति का है, जंगल में रहने वाले तोते को तो राम-राम नहीं आता, केवल पिंजरे में बन्द तोता ही सीखाई हुई भाषा बोल सकता है, तुम भी एक पिंजरे में बन्द हो जो तुम्हें सिखाया गया है उस पर ही चलते हो, और पिंजरे को ही अपना पूरा जीवन समझ लेते हो ।

अपने को साक्षीभूत बनाओ

अपने आप से अलग हटकर अपने बारे में विचार करना ही साक्षीभाव है, जब तक तुलना की तराजू तुम अपने पास रखे रहोगे, तब तक तुम यह भाव प्राप्त कर ही नहीं सकते हो, केवल अपने बारे में जब चिन्तन करना सीख जाओगे तो जीवन का एक मधुर अध्याय प्रारम्भ होगा ।

यह परमात्मा की लीला प्रकृति का सौन्दर्य थोड़ा निराला है, इसमें फूलों की खुशबू है, सुन्दर पहाड़ हैं, प्रकृति अपने पूरे स्वरूप में है, नदियां हैं, सागर हैं, इनको देखकर यदि कोई ख्याल तुम्हारे मन में आता है तो समझना कि कुछ हो रहा है, जब भी लोग हिल स्टेशन पर जाते हैं, कोई विशेष प्राकृतिक सौन्दर्य दृश्य देखते हैं तो सीधे कैमरा उठाकर उसका चित्र खींचते हैं, और सोचते हैं कि हमने इसको अब अपने पास कैद कर लिया है, क्या यह संभव है ? शांत भाव से कभी तुम पहाड़ों के सामने नदियों के पास, झरनों के पास बैठ सकते हो ? क्या उस सौन्दर्य को अपने भीतर गहरे उतार सकते हो ? जब यह प्रक्रिया होने लगे तब समझो कि तुमने अपने भीतर कुछ एकत्रित कर लिया है ।

गुरु और शिष्य

जब तुम गुरु के पास बैठो और पास बैठने मात्र से ही यह साक्षीभाव आने लगे तो समझो कि जीवन की सबसे बड़ी क्रिया तुम्हारे भीतर प्रारम्भ हो गई है, गुरु के पास बैठना ही अपने आप में सबसे बड़ा सुख है. लेकिन इसके विस्तार के लिए तुम्हें अपने जीवन में सौन्दर्य की, आनन्द की परिभाषा बदलनी पड़ेगी, जो आनन्द तुम्हें अपनी पत्नी के पास आता है जो आनन्द तुम्हें श्रेष्ठ भोजन करने से आता है जो प्रेम तुम्हारे भीतर सुख भर लेता है, उससे भी श्रेष्ठ आनन्द तुम्हें गुरु के पास प्राप्त हो सकता है केवल बैठने मात्र से, उनका ध्यान करने मात्र से और यह आनन्द छन-छन कर रोम-रोम में पहुंचता है, इसकी मिठास चखी नहीं जा सकती बल्कि अनुभव की जा सकती है, इसका नशा तो निराला ही है ।

गुरु तुम्हें तुम्हारी योग्यताओं से पहचान करा सकते हैं, तुम्हें जीवन जीने का आनन्द प्रदान करा सकते हैं और यह क्रिया तुम्हें केवल बता-बताकर सिखाई नहीं जा सकती, यह तुम अपने आप अनुभव करने लग जाओगे, जीवन में एक पहचान बनने लग जायेगी, एक साक्षीभाव अपने आप जाग्रत होने लग जायेगा, इस मार्ग में धूप है, थोड़ी पीड़ा है, और यह प्रारम्भिक पीड़ा ही विराट आनन्द से तुम्हें मिलाती है, भागती हुई नदी को तुमने देखा होगा कितने ही जगहों से बहती जब वह समुद्र में प्रचण्ड वेग से मिलती है, और तब जो तरंगें उठती हैं तो ऐसा लगता है मानों नृत्य हो रहा है एक मधुर संगीत वातावरण को गुंजायमान कर रहा है, और जब शिष्य गुरु से मिलने के लिए दौड़ना शुरु कर देता है तो फिर उसे कोई नहीं रोक सकता, उसे तो मिलना ही है, वह हजार-हजार बन्धन तोड़कर कष्ट पाकर भी अवश्य मिलेगा और जो उसका जीवन है उसको पूरी तरह से समझेगा, उसका आनन्द रस प्राप्त करके ही रहेगा ।

जीवन में भूलें सबसे होती हैं, लेकिन अपनी इन भूलों पर पछताना मत, क्योंकि ये जीवन तुम्हारा अपना था, इसमें तुमने अपना मार्ग स्वयं चुना और स्वयं सीधे अपने आप से, दूसरों के सिखाये से तुम सीख भी नहीं सकोगे, और जो जीवन में दुःख है वह अप्राप्ति का दुःख है, जो चीज प्राप्त नहीं हो पाती है और उसके लिए तृष्णा की ग्रन्थियां बार-बार सक्रिय होती हैं और यह तुम्हारे लिए दुःख का कारण बनती हैं, दुःख, पीड़ा से अलग है, जब कुछ नया सृजन करोगे, नया विचार करोगे तो पीड़ा प्रारम्भ में अवश्य होगी, लेकिन यह पीड़ा दुःख का कारण नहीं बनेगी ।

पके हुए फोड़े को काटने से पीड़ा अवश्य होती है, लेकिन यही पीड़ा शरीर के दुःख को दूर कर देती है, गुरु भी शिष्य को जो काम सौंपता है, जो करने को कहता है उसमें प्रारम्भ में पीड़ा लगती है, शिष्य जिस परम्परा से सोच कर जिस धर्म से बंधा रहता है, उस धर्म का बंधन जो कि कई पीढ़ियों पुराना है उसे छोड़ता ही नहीं, इसके लिए अपनी जीवन शैली बदलनी पड़ेगी, जीवन में एक सन्तुलन लाना पड़ेगा, और इस सन्तुलन का पहला अध्याय है, विचार हीनता ।

और जब इस पहले अध्याय में प्रवेश करोगे, गुरु तुम्हें साक्षीभाव उत्पन्न करना बताएंगे तो तुम्हारे भीतर एक उत्साह आयेगा, इस उत्साह में तुम्हारे सोचने का दृष्टिकोण बदलेगा, प्रेम की नई परिभाषाएं बनेंगी, शत्रुता के लिए इस साक्षीभाव में कोई स्थान ही नहीं है, आदमी अपने आपको दूसरों के साथ खड़ा होने पर छोटा या बड़ा अनुभव करता है, एक नाप-तौल एक मापदण्ड के आधार पर चाहे वो माप-तौल पैसे का हो, मकान का हो जमीन का हो, सुन्दरता का हो, अथवा किसी अन्य वस्तु का, और जब साक्षीभाव जाग्रत हो जाता है तो तुम ऊंचे उठ जाते हो, तब तुम्हें कोई दूसरा बड़ा लग ही नहीं सकता, क्योंकि तुम्हारे भीतर एक चैतन्यता आ गई है, तुमने आनन्द का नया अध्याय प्रारम्भ कर लिया है, तुम्हारे चुनाव बदल गये हैं, तब फिर नये सौन्दर्य का सृजन होता है, इसमें लम्बा सफर है, कुछ मीलों का नहीं, अपितु कुछ वर्षों का यह मार्ग है, अपने को केन्द्रीभूत रख कर जब चिन्तन प्रारम्भ होगा तभी सत्य की पहचान हो सकेगी, आप दूसरों से सम्बन्धित नहीं हैं बल्कि दूसरे आपसे सम्बन्धित हैं, यह बात बड़ी महत्वपूर्ण है।

बड़े-बड़े महापुरुषों ने तपस्याएं कीं, जो साधनाएं कीं, वे किसके लिए थीं ? वे सारी साधनाएं उनके खुद अपने लिए थीं, जब उन्होंने अपने भीतर उठते हुए प्रश्नों का समाधान प्राप्त कर लिया, अपने जीवन का महत्व समझ लिया, अपनी नई दिशा बना ली तो दूसरे अपने आप चले आए, उनको आवाज देने की जरूरत नहीं पड़ी, क्योंकि जो उनकी तरह कुछ नया प्राप्त करना चाहते थे वे उनके पास पहुंच ही गये।

ये महान् व्यक्तित्व चाहे कृष्ण हों, बुद्ध हों, सुकरात अथवा कबीर हों, प्रारम्भ में समाज ने इनको मजाक समझा, इनकी निन्दा की, इनके मार्ग में कांटे बिछाये, इनके पास सच्चे शिष्य बहुत कम और डरते-डरते ही आये, क्योंकि संघर्ष की पीड़ा बहुत कम लोग ही उठाना चाहते हैं, वे तो इस राह से बच कर निकलना सांसारिक धर्म समझते हैं, लेकिन जो शिष्य इन गुरुओं के पास गये तो उन्होंने सब कुछ नये रूप में, नये अर्थ में पा लिया, बाद में तो भीड़ बढ़ती ही गयी, इसलिए जब गुरु प्रवचन देते हैं तो वे शब्द साधारण शब्द नहीं होते, उन शब्दों में बहुत गहरा अर्थ होता है, और यदि कोई बहरा है तो उसे हजार-हजार बार आवाज दो तो भी उसे सुनाई नहीं देगा, ये बहरे वास्तव में अपने कानों में रुई ठूंसे हुए हैं, इन्हें डर है कि कहीं ऐसा-वैसा सुन लिया, जिससे इनके सांसारिक लीक में बंधे जीवन में व्यवधान हो जायेगा, तो इनका मालिक तो परमात्मा भी नहीं हो सकता, ऐसे लोगों को लीक पर ही चलने दो, लेकिन तुम लोग तो कुछ अलग हो, उस अलग से तुम्हें पहिचान भी होने लगी है, लेकिन अभी हिम्मत नहीं बन पाई है, ये हिम्मत धीरे-धीरे अवश्य विकसित होगी, क्योंकि तुम इस हिम्मत को नियमित रूप से ज्ञान और विचारों की खाद दे रहे हो, इसमें गुरु वचनों का जल डाल रहे हो, तो यह पौधा तो विकसित होकर रहेगा, और अपना सम्पूर्ण सौन्दर्य सुगन्ध फैला कर रहेगा।

मेरे प्रिय ! तुम्हें साक्षीभाव जाग्रत करना है, नई परिभाषाएं बनानी हैं, नया रूप ग्रहण करना है, अपने आपको पहिचानना है, बहुत समय बीत चुका है, अब इस चिन्तन को और जोश देना है, तूफान पैदा कर देना है, जीवन को वास्तविक रूप में आनन्द के साथ जीना है, घिसटते हुए काटना नहीं है।

तन्त्र-विज्ञान विशेषांक

(जनवरी–१९९२)

विश्व का सबसे अधिक प्राचीन, रहस्य पूर्ण विज्ञान तन्त्र विज्ञान ही है, तन्त्र के सम्बन्ध में फैली भ्रान्तियां इस विज्ञान में नहीं, अपितु अधकचरे कथित तांत्रिकों द्वारा तन्त्र के स्वरूप को गलत एवं घृणित रूप से प्रदर्शन के कारण है।

आज जनवरी ९२ का यह अद्वितीय विशेषांक गुरु कृपा का वसन्त उत्सव है जिसके प्रत्येक पन्ने पर स्पष्ट की गई है–इस महान विज्ञान का रहस्य, तन्त्र का श्रोत है शिव और तन्त्र से जुड़े देह, कर्म शक्ति, कुण्डलिनी, आचार, जीवन रस, दीक्षा एवं महाशक्ति।

एक-एक पन्ना जीवन्त दस्तावेज है, जो आपके लिए खोलेगा इस गूढ़ महाविज्ञान के वे रहस्य जो जुड़े हैं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र से, कला से, यह गुरु कृपा धरोहर है भावी पीढ़ियों के लिए, दर्शन है ज्ञान का, प्रक्रिया है जागरण की।

सौभाग्यशाली हैं आप और आपके साधक भाई जिन्हें गुरु अमृत वचनों का यह अमृत पान प्रत्यक्ष प्राप्त हो रहा है सबसे पहले—

देखिये, परखिये और समाज को तन्त्र के सम्बन्ध में गलत धारणाओं को दूर कीजिये और कल्प-वृक्ष की तरह फलदायक इस ज्ञान को अपनी जीवन व्यवस्था का अंश बना कर महान राष्ट्र के उन्नति में योगदान दीजिये, जीवन में साधारण मनुष्य नहीं अपितु कर्णधार बनिये।

● तन्त्र में गोपनीयता क्यों ?

तन्त्र का सिद्धान्त क्या है ? तन्त्र प्राप्ति का अधिकार किसको है ? क्यों इसे गोपनीय रखा गया है ? क्या रहस्य है इसका ?

● तान्त्रिक पूजन रहस्य

तन्त्र पूजा के प्रधान स्वरूप, पूजा का क्रम, पूजा की विधि, उपचार आदि सामान्य जन के लिए पहली बार जिससे इस महाज्ञान रहस्यमय क्षेत्र में आप प्रवेश कर सकते हैं।

● शिव और तन्त्र

तन्त्र के आदि पुरुष भगवान शिव ही हैं और शिव साधना की वह तान्त्रिक विधि जो साधक को साक्षात् शिव से साक्षात्कार कराती है यह आधार है तान्त्रिक साधना का।

● तन्त्र और देह सिद्धि

क्या देह को नवीन, तेजस्वी बनाया जा सकता है। देह अर्थात् शरीर को अपने नियन्त्रण में कर अपना लक्ष्य कैसे प्राप्त किया जाय सरलतम रूप में प्रत्यक्ष प्रयोगों के आधार पर कुछ विशेष गोपनीय प्रयोग।

● तन्त्र और व्यक्ति

शक्ति, शक्तिपात, कुण्डलिनी जागरण, यह सब तान्त्रिक प्रक्रिया है, शक्ति का आधार है, शिव और शक्ति का मार्ग है तन्त्र। किस प्रकार शक्ति से साक्षात्कार स्वयं को साधारण से शक्ति भाव बनाया जाय।

● तन्त्र का वाम मार्ग

सुरा, सुन्दरी, योनि पूजन, भैरवी चक्र यह सब क्या है? क्या तन्त्र का यह रूप आवश्यक है? कौन तन्त्र का वाम मार्ग अपनाये? कौलाचार्य कौन हो सकता है? कौल सम्प्रदाय क्या है? एक रहस्यमय संसार का पूरा विवरण पढ़िये और समझिये।

वह तांत्रिक साधना जिसके द्वारा साक्षात् स्वर्ग अप्सराओं का नृत्य अपने सामने देखा जा सकता है, उसमें स्वयं भाग लिया जा सकता है।

● विलक्षण तांत्रिक पीठ

पूज्य गुरुदेव द्वारा की गई यात्राएं विशेष तान्त्रिक पीठों पर, किस तान्त्रिक पीठ पर क्या साधनाएं होती है? रोचक गोपनीय विवरण जो आपकी आस्था के कई भ्रम तोड़ेगा और कई नये अब तक अज्ञात रहे चमत्कारिक स्थानों का ज्ञान करायेगा।

● तन्त्र और भैरव

तान्त्रिक साधना का वह अद्भुत अध्याय जिसमें छिपी है स्तम्भन, वशीकरण, मारण, उच्चाटन, के विशेष तन्त्र प्रयोग जिन्हें उसी रूप में सम्पन्न कर प्रत्यक्ष फल अनुभव किया जा सकता है।

● लक्ष्मी तन्त्र

तन्त्र के माध्यम से लक्ष्मी को वशीभूत किया जा सकता है, इस महाशक्ति को अपने लिए स्थायी बनाया सकता है। लक्ष्मी साधना का विशेष तान्त्रिक प्रयोग।

● **तान्त्रोक्त गुरु साधना**

गुरु तो वश में है शिष्य के, आवश्यकता है तांत्रिक दीक्षा प्राप्त कर गुरु भक्ति की, फिर गुरु कृपा से शक्तिपात एवं सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

● **विशेष तन्त्र**

शैव तन्त्र, दक्षिण तन्त्र, वाम तन्त्र, कौल तन्त्र, सिद्धान्त तन्त्र, भैरव तन्त्र, यामल तन्त्र, बौद्ध तन्त्र, भैरवी तन्त्र, चामुण्डा तन्त्र, योगिनी तन्त्र, स्वच्छन्द भैरव तन्त्र, कामाख्या तन्त्र, महाकाल तन्त्र, क्या छिपा है इन तन्त्रों में ? और किस प्रकार इस ज्ञान को अपने लिए उपयोग में लाया जा सकता है ?

● **तन्त्र की मैली विद्या—डामर तन्त्र**

भूत, प्रेत, पिशाच को अपने वश में कर तांत्रिक किस प्रकार प्रयोग करते हैं इसका कितना असर होता है और इस तांत्रिक मैली विद्या का निराकरण कैसे किया जा सकता है, पत्रिका में पहली बार।

● **तन्त्र और भविष्य ज्ञान**

क्या तन्त्र विद्या द्वारा किसी के भूतकाल और भविष्य काल को अपनी आंखों के सामने देखा जा सकता है ? जी हां ! यह विद्या तन्त्र का आधार है और प्रत्यक्ष सिद्ध किया जा सकता है।

ये तो कुछ झलकियां हैं जनवरी—१९९२ के तन्त्र विशेषांक की, इसमें तो और भी अधिक गूढ़ ज्ञान, दुर्लभ सामग्री प्रकाशित की जा रही है पूर्ण वैज्ञानिक विवेचन के साथ, जो झकझोर देगी आपको और आपकी आस्थाओं को, शुद्ध ज्ञान पूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद से पत्रिका सदस्यों के लिए।

इसके साथ आपको आगे भी प्राप्त होंगे हर माह ज्ञान रस से सराबोर अंक जिनका प्रत्येक लेख महत्वपूर्ण होगा।

अपनी सदस्यता का नवीनीकरण शीघ्र कराएं और अपने मित्र प्रेमी सज्जनों को सदस्य बनाएं तथा प्राप्त करें यह महत्वपूर्ण विशेषांक। ●

केवल पत्रिका सदस्यों के लिए

पत्रिका का प्रत्येक सदस्य अपने भीतर एक अनोखी सम्यक् ज्ञान लिए हुए है, उसने अपने कदम एक विशेष राह पर डाल दिये हैं अपने वर्तमान एवं भविष्य निर्माण का जिम्मा पूज्य गुरुदेव को सौंप दिया है, पूरे भारत वर्ष में फैले सभी सदस्य अपने आपमें मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान के प्रचारक हैं, चेतन प्रहरी हैं।

पिछले अंक में सदस्यों को जो उपहार यन्त्र देने की योजना प्रकाशित की गई वह आज भी कायम है और पत्रिका कार्यालय के हम सभी सदस्यों का अनुरोध है कि आप इसका पूर्ण लाभ अवश्य उठायें।

नीचे लिखे उपहार यन्त्र में से किसी एक पर ☐ ✓ सही का चिन्ह लगा दें हम आपको यह यन्त्र पूज्य गुरुदेव के कर कमलों से अभिमन्त्रित कराकर उनके हस्ताक्षर से युक्त आशीर्वाद पत्र अवश्य भेज देगें।

★ कुबेर पात्र ☐ ★ चित्रक महालक्ष्मी यन्त्र ☐ ★ उर्वशी यन्त्र ☐ ★ त्रैलोक्य सम्पदा वर वरद यन्त्र ☐ ★ सिद्धि पुरुष यन्त्र ☐ ★ मनोवांछित कामना सिद्धि यन्त्र ☐ ★ देहसिद्धि गुटिका ☐ ★ पुष्पदेहा अप्सरा यन्त्र ☐ ★ स्वर्णरेखा यन्त्र ☐ ★ गुरु रहस्य सिद्धि माला ☐ ★ मृगाक्षी अप्सरा यन्त्र ☐ ★ महात्रिपुर सुन्दरी यन्त्र ☐ ★ पन्द्रहिया यन्त्र ☐ ★ कामदेव रति यन्त्र ☐ ★ मुरादी यन्त्र ☐ ★ ललिताम्बा यन्त्र ☐

प्रपत्र

ऊपर दिये गये विवरण के अनुसार मैं पूज्य गुरुदेव का शिष्य एवं पत्रिका सदस्य होने के नाते इस उपहार को प्राप्त करने का अधिकारी हूं, और ऊपर दिये गये उपहार सूची के अन्तर्गत मुझे निम्न उपहार यन्त्र, जो पूज्य गुरुदेव के करकमलों से सिद्ध हो, मुझे तत्काल १२०)रु० + डाक खर्च की वी०पी० से भेज दें, और मेरी सदस्यता का नवीनीकरण वर्ष ९२ के लिए कर दें, पूज्य गुरुदेव मेरा कल्याण करें, और अपनी कृपा प्रदान करें।

उपहार यन्त्र का नाम..

मेरी सदस्यता संख्या..

मेरा पूरा नाम..

मेरा पूरा पता..

....

हस्ताक्षर

सफल जीवन हेतु आवश्यक

गणपति ऋद्धि-सिद्धि अनुष्ठान

सर्वमंगलमय विघ्नहर्ता गणपति तो जीवन में पूर्णता देने वाले और विघ्नों का नाश करने वाले देव हैं, उनकी दो पत्नियां 'ऋद्धि और सिद्धि' हैं, जिस घर में इन दोनों देवियों की स्थापना होती है, वहां स्वयं गणपति साक्षात् रूप में उपस्थित रहते हैं।

गणपति और ऋद्धि-सिद्धि साधना प्रत्येक गृहस्थ के लिए आवश्यक है, क्योंकि ये तीनों एक दूसरे से जुड़े, और जीवन को पूर्णता प्रदान करने वाले हैं।

३१ दिसम्बर पौष कृष्ण ११ मंगलवार ऋद्धि-सिद्धि साधना "सफला एकादशी दिवस" है, इस दिन साधना कर जीवन में बहुत कुछ प्राप्त किया जा सकता है।

गणपति स्वयं ज्ञान और निर्वाण को देने वाले हैं, **'ब्रह्मवैवर्त पुराण'** में कहा गया है, कि गणपति ही एक मात्र ऐसे देवता हैं, जो सभी दृष्टियों से पूर्णता प्रदान करने वाले है, **लिंग पुराण** में भी यही बताया गया है, कि सभी देवताओं पर विचार करने के बाद यही निर्णय सर्वमान्य है, कि जीवन में पूर्ण सफलता और सिद्धि गणपति के माध्यम से ही संभव है।

मैं यहां गणपति के बारे में ज्यादा विवेचन न कर इस साधना के बारे में मूल तथ्य स्पष्ट कर रहा हूं।

ऋद्धि-सिद्धि

गणपति स्वयं बुद्धि सागर और उच्चकोटि के ज्ञानी थे, जब गणपति वयस्क हुए तो विश्वकर्मा-विश्वरूप की दो लड़कियों से गणपति का विवाह होना निश्चित हुआ, इन दोनों कन्याओं में एक का नाम **'ऋद्धि'** और दूसरी का नाम **'सिद्धि'** था, इन दोनों ही कन्याओं से विवाह होने पर जहां पर भी ये दोनों देवियां होती हैं, वहीं गणपति का वास होता है, विश्वकर्मा तो स्वयं समस्त भोगों को प्रदान करने वाले, और जीवन में पूर्णता देने वाले देव हैं, इसलिए इन दोनों की साधना से सुख प्राप्त होता है, कहते हैं कि ऋद्धि-सिद्धि साधना करने से भूमि लाभ, शीघ्र भवन बनने तथा परिवार में पूर्ण सुख-शान्ति प्राप्त होने की क्रिया उसी दिन से शुरु हो जाती है।

कुछ समय बाद इन दोनों पत्नियों से एक-एक पुत्र उत्पन्न हुआ, सिद्धि से जो पुत्र उत्पन्न हुआ, उसका नाम रखा गया 'लक्ष्य' **और बुद्धि से जो पुत्र पैदा हुआ उसका नाम** 'लाभ' **रखा गया, इस प्रकार** 'लक्ष्य-लाभ, ऋद्धि-सिद्धि और स्वयं गणपति' **से मिल कर यह परिवार अपने आप में पूर्णता और सफलता देने वाला बन गया।**

सफला एकादशी ऋद्धि-सिद्धि साधना दिवस है, और प्रत्येक गृहस्थ के लिए, जो अपने जीवन में, अपने परिवार में सभी दृष्टियों से पूर्णता और सफलता चाहते हैं, उन्हें अवश्य ही यह साधना सम्पन्न करनी चाहिए।

यह साधना गोपनीय रही है, गणपति की साधना तो जगत विख्यात है, परन्तु पूरे गणपति परिवार की साधना एक साथ करने का विधान बहुत कम लोगों को ज्ञात है, **गणेश उपनिषद** के श्लोकों की सूक्ष्म मीमांसा कर इस साधना को स्पष्ट किया गया है।

साधना प्रयोग

यह एक दिन की साधना है, स्त्रियां यदि साधना करती हों, तो सुबह स्नान कर अपने बालों को धो लें, और उसके बाद ही साधना में भाग लें, यदि संभव हो तो पति-पत्नी दोनों इस साधना में भाग ले सकते हैं, कुंवारी कन्याएं अपने सिर के बालों को धो कर योग्य वर की प्राप्ति के लिए साधना को सम्पन्न कर सकती हैं।

सर्वथा शुद्ध और पवित्र हो कर पीले वस्त्र धारण कर उत्तर दिशा की ओर मुंह कर पीले आसन पर बैठ जांय, सामने यदि संभव हो तो भगवान गणेश जी का बड़ा सा चित्र स्थापित कर दें, फिर लकड़ी का बाजोट अपने सामने बिछाएं और उस पर पीला कपड़ा बिछा दें, बाजोट पर एक थाली रखें, **(यह थाली स्टील की या लोहे की नहीं होनी चाहिए)** इसके बाद थाली के मध्य में एक स्वस्तिक बनाएं और उसके चारों तरफ एक-एक स्वस्तिक केसर से अंकित करें, इस प्रकार फिर एक स्वस्तिक मध्य में, और इस मध्य वाले स्वस्तिक के चारों ओर एक-एक स्वस्तिक केसर से बनाएं।

ब्रह्म वैवर्त पुराण के अनुसार मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त **'गणपति पंचानन यन्त्र'** की स्थापना करें, इसमें पांच यन्त्र होते हैं, **१-गणपति विग्रह, २-ऋद्धि यन्त्र, ३-सिद्धि यन्त्र, ४-सुख यन्त्र, ५-लाभ यन्त्र,** इस प्रकार इन पांचों यन्त्रों को अलग-अलग स्थापित कर प्रयोग सम्पन्न किया जाता है, अतः इनकी स्थापना नीचे दी गई विधि के अनुसार ही करें।

सबसे पहले मध्य में स्वस्तिक पर चावलों की ढेरी बना कर गणपति को स्थापित करें, गणपति के बांई ओर ऋद्धि और दाहिनी ओर सिद्धि को स्थापित करें, गणपति के ऊपर बने हुए स्वास्तिक पर लाभ और नीचे की ओर बने हुए स्वास्तिक पर सुख की स्थापना करें, चावलों की ढेरी बना कर उसके ऊपर इन यन्त्रों को बताये हुए क्रम से स्थापित कर दें।

इसके बाद सामने पांच घी के दीपक और पांच अगरबत्तियां जलाएं, और फिर पहले से ही १०५ पुष्प मंगवा कर रख देने चाहिए, पूरे परिवार के लिए १०५ पुष्प पर्याप्त हैं, एक बार पुष्प चढ़ाने के बाद उसी पुष्प को दुबारा नहीं चढ़ाया जा सकता।

इसके बाद निम्न मन्त्रों से प्रत्येक विग्रह पर इक्कीस-इक्कीस पुष्प चढ़ावें—

गणपति मन्त्र

।। ॐ गं गणपतये नमः ।।

इस मन्त्र से भगवान् गणेश पर इक्कीस पुष्प चढ़ाएं।

ऋद्धि मन्त्र

।। ॐ हेम वर्णायै ऋद्धये नमः ।।

इस मन्त्र से ऋद्धि पर २१ पुष्प चढ़ाएं।

सिद्धि मन्त्र

।। ॐ सर्व ज्ञान भूषितायै सिद्धये नमः ।।

इस मन्त्र से सिद्धि पर २१ पुष्प चढ़ाएं।

लाभ मन्त्र

।। ॐ सौभाग्यप्रदायक धन-धान्य युक्तायै लाभायै नमः ।।

इस मन्त्र से लाभ पर २१ पुष्प चढ़ाएं।

सुख मन्त्र

।। ॐ पूर्णायै पूर्णमादायै सुखायै नमः ।।

इस मन्त्र से सुख पर २१ पुष्प चढ़ाएं।

इस प्रकार पांचों को पुष्प चढ़ा कर फिर जल को छिड़क कर स्नान कराएं और सभी के केसर का तिलक करें, इसके बाद सभी को एक साथ लड्डू का भोग लगाएं और निम्न स्तोत्र का १०५ बार पाठ करें—

कान्हेश्वरीं महालक्ष्मीं ब्रह्माण्ड वशकारिणीम्।
सिद्धेश्वरीं सिद्धिदात्रीं शत्रूणां भयदायिनीं ।१।

ऋद्धि देवीं पोत-वस्त्रां उद्यत-भानु समप्रभाम्।
कुल देवीं नमामि त्वां सर्व-कामप्रदां शिवाम् ।२।

सिद्धि-रूपेण देवी त्वां विष्णु प्राण सुवल्लभाम्।
कालि-रूप धृतां उग्रां रक्त-बीज निपातिनीम् ।३।

विद्या-रूप धरां पुण्यां सुख-लाभप्रद स्थिताम्।
दुर्गा-रूप धरां देवीं दैत्य-दर्प विनाशिनीम् ।४।

मूषक वाहना रूढ़ां सिंह-वाहन संयुताम्।
ऋद्धि-सिद्धि महादेवी पूर्ण सौभाग्य देहि मे ।५।

इस स्तोत्र के १०५ पाठ करने आवश्यक हैं, यदि एक ही बार में यह संभव न हो सके, तो साधक चाहे तो २१ पाठ के बाद पांच सात मिनट का विश्राम कर सकता है।

जब पाठ समाप्त हो जाय, तो घर में गुड़ से बनी हुई मिठाई जैसे हलवा वगैरह बनाएं, दूध से खीर बनायें, और विविध प्रकार के व्यंजन बना कर गणेश पंचानन को भोग लगाएं, और फिर पूरे परिवार के साथ बैठ कर भोजन करें, इस अवसर पर अपने इष्ट मित्रों को भी भोजन के लिए बुलाया जा सकता है।

विविध व्यंजनों का भोग लगा कर यदि संभव हो तो भगवान गणपति की आरती करें, और घर की बेटियों और बहुओं को यथोचित भेंट आदि दें। ●

श्री गुरुपादुका पंचकम्

ॐ नमो गुरुभ्यो गुरुपादुकाभ्यो
नमः परेभ्यः परपादुकाभ्यः ।
आचार्यसिद्धेश्वरपादुकाभ्यो
नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्यः ।।१।।

मैं पूज्य गुरुदेव को प्रणाम करता हूं, मेरी उच्चतम भक्ति गुरु के चरणों और उनकी पादुका के प्रति है, क्योंकि गंगा-यमुना आदि समस्त नदियां और संसार के समस्त तीर्थ उनके चरणों में समाहित हैं, यह पादुकाएं ऐसे चरणों से आप्लावित रहती हैं, इसीलिए मैं इन पादुकाओं को प्रणाम करता हू, यह मुझे भवसागर से पार उतारने में सक्षम हैं, यह पूर्णता देने में सहायक हैं, ये पादुकाएं आचार्य और सिद्ध योगी के चरणों में सुशोभित रहती हैं, और ज्ञान के पुंज को अपने ऊपर उठाया है, इसीलिए ये पादुकाएं ही सही अर्थों में सिद्धेश्वर बन गई हैं, इसीलिए मैं इन गुरु पादुकाओं को भक्ति भाव से प्रणाम करता हूं ।

ऐंकार ह्रींकाररहस्ययुक्त
श्रींकारगूढार्थमहाविभूत्या ।
ओम्कारमर्मप्रतिपादिनीभ्यां
नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ।।२।।

गुरुदेव "ऐंकार" रूप युक्त हैं, जो कि साक्षात् सरस्वती के पुंज हैं, गुरुदेव "ह्रींकार" युक्त हैं, एक प्रकार से देखा जाय तो वे पूर्णरूपेण लक्ष्मी युक्त हैं, मेरे गुरुदेव "श्रींकार" युक्त हैं, जो संसार के समस्त वैभव, सम्पदा और सुख से युक्त हैं, जो सही अर्थों में महान विभूति हैं, मेरे गुरुदेव "ॐ" शब्द के मर्म को समझाने में सक्षम हैं, वे अपने शिष्यों को भी उच्च कोटि की साधना सिद्ध कराने में सहायक हैं, ऐसे गुरुदेव के चरणों में लिपटी रहने वाली ये पादुकाएं साक्षात् गुरुदेव का ही विग्रह हैं, इसीलिए मैं इन पादुकाओं को श्रद्धा-भक्ति युक्त प्रणाम करता हूं ।

होत्राग्निहौत्राग्निहविष्यहोतृ-
होमादिसर्वाकृतिभासमानं ।
यद् ब्रह्म तद्वोधवितारिणीभ्यां
नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्यां ।।३।।

ये पादुकाएं अग्नि स्वरूपा हैं, जो मेरे समस्त पापों को समाप्त करने में समर्थ हैं, ये पादुकाएं मेरे नित्य प्रति के पाप, असत्य, अविचार और अचिन्तन मे युक्त दोषों को दूर करने में समर्थ हैं, ये अग्नि की तरह हैं, जिनका पूजन करने से मेरे समस्त पाप एक क्षण में ही नष्ट हो जाते हैं, इनके पूजन से मुझे करोड़ों यज्ञों का फल प्राप्त होता है, जिसकी वजह से मैं स्वयं ब्रह्म स्वरूप हो कर ब्रह्म को पहिचानने की क्षमता प्राप्त कर सका हूं, जब गुरुदेव मेरे पास नहीं होते, तब ये पादुकाएं ही उनकी उपस्थिति का आभास प्रदान कराती रहती हैं, जो मुझे भवसागर मे पार उतारने में सक्षम हैं, ऐसी गुरु पादुकाओं को मैं पूर्णता के साथ प्रणाम करता हूं ।

कामादिसर्पव्रजगारुडाभ्यां
विवेकवैराग्यनिधिप्रदाभ्यां ।
बोधप्रदाभ्यां द्रुतमोक्षदाभ्यां
नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ।।४।।

मेरे मन में काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के सर्प विचरते ही रहते हैं, जिसकी वजह से मैं दुखी हूं, और साधनाओं में मैं पूर्णता प्राप्त नहीं कर पाता, ऐसी स्थिति में गुरु पादुकाएं गरुड़ के समान हैं, जो एक क्षण में ही ऐसे कामादि सर्पों को भस्म कर देती हैं, और मेरे हृदय में विवेक, वैराग्य, ज्ञान, चिन्तन, साधना और सिद्धियों का बोध प्रदान करती हैं, जो मुझे उन्नति की ओर ले जाने में समर्थ हैं, जो मुझे मोक्ष प्रदान करने में सहायक हैं, ऐसी गुरु पादुकाओं को मैं भक्ति सहित प्रणाम करता हूं ।

अनंतसंसारसमुद्रतार
नौकायिताभ्यां स्थिरभक्तिदाभ्यां ।
जाड्याब्धिसंशोषणवाडवाभ्यां
नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ।।५।।

यह संसार विस्तृत है, इस भवसागर को पार करने में ये पादुकाएं नौका की तरह हैं, जिसके सहारे मैं इस अनन्त संसार सागर को पार कर सकता हूं, जो मुझे स्थिर भक्ति देने में समर्थ हैं, मेरे अन्दर अज्ञान की घनी झाड़ियां हैं, उसे अग्नि की तरह जला कर समाप्त करने में सहायक हैं, ऐसी पादुकाओं को मैं भक्ति सहित प्रणाम करता हूं ।

अपने आपको कम नहीं समझें
क्योंकि
कृत्या साधना द्वारा सिद्धि संभव है
अद्भुत तांत्रिक-मांत्रिक प्रयोग

साधनाएं केवल पढ़ने के लिए ही आपकी इस पत्रिका में प्रकाशित नहीं की जातीं, अपितु इसलिए दी जाती हैं, कि उचित समय पर आप स्वयं साधनाएं सम्पन्न करें, उसके प्रभाव को समझें, यह प्रभाव किसी को जल्दी प्राप्त हो सकता है, और किसी को विलम्ब से, अतः तात्कालिक सफलता न मिलने पर साधक का दोष नहीं अपितु दोष आपके साधनात्मक स्तर का है, और इस स्तर का विकास सतत् प्रकिया द्वारा ही संभव है।

कुछ साधनाएं शान्त और सरल होती हैं, और कुछ तीव्र साधनाएं, तीव्र साधनाएं तो तब सम्पन्न की जाती हैं, जब और कोई उपाय काम ही न आएं, अथवा समस्याओं के सागर में साधक डूबने ही लग जाय; पत्रिका में प्रकाशित प्रयोगों को साधकों ने अपनाया, उसे वास्तविक रूप में साकार किया, और अपने जीवन में विशेष परिवर्तन प्राप्त किया, समस्याओं को सुलझाया, अपना ही नहीं दूसरों का दुःख दर्द भी दूर किया।

कृत्या साधना के बारे में पत्रिका कार्यालय को पत्र नियमित रूप से प्राप्त होते रहे हैं, लेकिन इस प्रयोग की तीक्ष्णता और कुछ अन्य विशेषताओं के कारण ज्यादा जानकारी नहीं दी गई, क्योंकि इसकी तीव्रता कमजोर, बीमार साधक झेल नहीं सकता है, यह साधना व्यक्ति पूर्ण रूप से स्वस्थ हो, तभी सम्पन्न की जानी चाहिए।

कृत्या

कृत्या उच्चकोटि का तांत्रिक-मांत्रिक प्रयोग है, जब भगवान शिव ने दक्ष का यज्ञ विध्वंस करने के लिए अपने गणों को भेजा और वीरभद्र जैसे बलशाली गण भी दक्ष के मन्त्रों के आगे बेबस और असहाय हो गये, तब भगवान शिव ने अपनी जटा में से एक कृत्या का निर्माण किया, जो कि अत्यन्त वीभत्स डरावनी, भयानक और पूरी सृष्टि का प्रलय करने में समर्थ थी, जमीन पर पैर रखते ही पृथ्वी अपने आप में नीचे धसकने लगी, दसों दिशाएं उसकी हुंकार से डोलने लगीं, और सम्पूर्ण विश्व में

खलबली सी मच गई, वह शिव की आज्ञा पा कर दूसरे ही क्षण दक्ष की यज्ञ शाला में जा पहुंची, और सारे यज्ञ को तहस-नहस कर दिया, अन्य लोगों की तो बात क्या, वहां बैठे सैकड़ों देवी देवताओं तक को उठा-उठा कर फेंक दिया, और यज्ञ के आयोजन कर्ता दक्ष का सिर एक ही झटके से काट दिया, ऐसा लग रहा था कि मानों कृत्या के रूप में कोई प्रलय उपस्थित हो गया हो, जिसके आगे न तो देवताओं की सिद्धि चल पा रही थी, और न दक्ष के मन्त्रों का ही कोई प्रभाव व्याप्त हो रहा था, उस कृत्या के सारे शरीर से आग की लपटें निकल रही थीं, जिससे पूरा संसार झुलस रहा था, उसके क्रोध के आगे आकाश और पृथ्वी, पवन और दसों दिशाएं थरथर कांप रही थीं, और ऐसा लग रहा था, कि इसको शान्त करना अत्यधिक कठिन ही नहीं अपितु असंभव है।

तब सभी देवता भगवान शिव के आगे गिड़-गिड़ाने लगे, हाथ जोड़ कर क्षमा मांगने लगे, तब जाकर शिव का क्रोध कुछ शान्त हुआ और उन्होंने कृत्या को पुनः शान्त कर अपने पास बुला लिया।

ऐसी तीव्र कृत्या सिद्ध हो जाय, तो फिर साधक स्वयं शक्ति सम्पन्न बन जाता है, गुरुदेव से बहुत अनुनय विनय करने पर उन्होंने इस **कृत्या योग** का जो रहस्य प्रकट किया, उसे पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है।

कृत्या सिद्धि दिवस

तांत्रिक साधनाओं के लिए **अमावस्या का दिन और** रात्रि सर्वश्रेष्ठ सिद्ध समय कहा गया है, कृत्या साधना भी अमावस्या के दिन ही प्रारम्भ की जानी चाहिए, और इस वर्ष **पौष कृष्ण अमावस्या** को शनिवार भी है, तथा विशेष मुहूर्त है, यह दिवस **कृत्या दिवस** ही है, इस दिन साधना प्रारम्भ की जानी चाहिए।

यदि किसी कारणवश इस अमावस्या को साधना प्रारम्भ नहीं करें, तो इससे अगली अमावस्या को साधना प्रारम्भ की जा सकती है, अमावस्या का विशेष विधान है।

कृत्या साधना के कुछ विशेष नियम होते हैं, और साधना में इन नियमों का पालन करना आवश्यक है और पत्रिका के प्रत्येक सदस्य में से जो भी अपने आपको पूज्य गुरुदेव का शिष्य समझता है, वह यह साधना सम्पन्न कर सकता है।

विशेष नियम

१– यह साधना ११ दिन की है, रात्रिकालीन है, और इसमें काली धोती पहन कर, दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर, काले आसन पर बैठ कर सामने तेल का दीपक लगा कर **"कृत्या माला"** से मन्त्र जप आवश्यक है, यह कृत्या माला अद्भुत तरीके से गुंथी हुई होती है, और इसका प्रत्येक मनका अपने आप में मन्त्र सिद्ध होता है।

२– यह कृत्या माला केवल इस प्रयोग में ही नहीं, अपितु किसी भी प्रकार की महाविद्या साधना में और उच्च कोटि के तांत्रिक प्रयोगों में प्रयोग की जा सकती है, वास्तव में ही यह माला साधनात्मक संसार का अद्भुत रहस्य है, जिसके गले में भी मात्र यह माला पड़ी होती है, उसके द्वारा स्वतः अद्भुत चमत्कार होते रहते हैं।

३ - अपने सामने **पंच महामन्त्रों से अनुप्राणित, शिव शक्ति साधना से सिद्ध और ब्रह्मप्राणश्चेतना युक्त 'कृत्या यन्त्र'** किसी तांबे के पात्र में स्थापित कर देना चाहिए और उसकी पंचोपचार पूजा करनी चाहिए, पंचोपचार में जल, कुंकुम, अक्षत, पुष्प और नैवेद्य आता है।

इसके बाद वीरासन में बैठकर या सामान्य तरीके से पालथी मार कर कृत्या मन्त्र की ११ माला मन्त्र जप आवश्यक है।

४– इस साधना में पूर्ण ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना, एक समय भोजन करना आवश्यक है।

५- साधना समाप्ति के बाद उस यन्त्र को बांह पर बांध लेना चाहिए या गले में पहिन लेना चाहिए, यदि लम्बे समय तक ऐसा सम्भव न हो सके तो तीस दिनों तक तो उस यन्त्र को धारण करना ही चाहिए, जिससे कि सारे शरीर में कृत्या रम सके, और साधक कृत्या का प्रयोग कर सके।

कृत्या प्रयोग सिद्धि

१- यह साधना सिद्ध होने पर साधक अजेय, शत्रुओं पर पूर्ण विजय प्राप्त करने वाला और मन में असीम बल धारण करने वाला हो जाता है।

२-ऐसे साधक को वचनसिद्धि प्राप्त हो जाती है, और साधना सिद्धि के बाद वह मात्र एक बार कृत्या मन्त्र का उच्चारण कर सामने वाले को जो भी कह देता है, वह तुरन्त हो जाता है, एक प्रकार से उसे वचन सिद्धि प्राप्त हो जाती है, या यूं कहा जाय कि उसमें श्राप या वरदान देने की अद्भुत क्षमता प्राप्त हो जाती है।

३-वह कृत्या मन्त्र का जिस व्यक्ति पर या किसी व्यक्ति के फोटो पर जिस प्रकार का प्रयोग करे, वह प्रयोग तुरन्त सम्पन्न हो जाता है, उदाहरण के लिए कृत्या प्रयोग के द्वारा मारण, मोहन, उच्चाटन और वशीकरण तुरन्त सिद्ध होता है, यदि वह कभी भी कृत्या प्रयोग का मन्त्र जप कर सामने वाले व्यक्ति को मन ही मन कहे, कि यह मुझसे माफी मांगे, या मेरा कहा माने, या मेरे सामने गिड़गिड़ाये, तो वह तत्क्षण सम्पन्न हो जाता है, इसी प्रकार इसके माध्यम से किसी पुरुष या स्त्री को तुरन्त वश में किया जा सकता है।

४-इस प्रयोग की सबसे बड़ी विशेषता है कि किसी भी प्रकार के रोगी व्यक्ति को देखकर यदि कृत्या मन्त्र से सिद्ध जल छिड़कें या पिला दें तो रोग में तुरन्त सफलता प्राप्त हो जाती है, कमजोर और अशक्त रोगियों को ताकत प्रदान की जा सकती है, और छोटे-मोटे रोग तो एक बार कहने से ही समाप्त हो जाते है।

५-इसके माध्यम से पति-पत्नी का कलह दूर किया जा सकता है, किसी को भी जीवन भर के लिए अपने वश में किया जा सकता है, और मनोवांछित कार्य सम्पन्न किया जा सकता है।

६-यदि किसी शत्रु का सर्वनाश करना हो, तो सिद्ध साधक के लिए अत्यन्त आसान है, इस प्रयोग से एक-एक करके शत्रु के पारिवारिक सदस्य मरते जाते हैं, अचानक घर में आग जाती है, या दूसरे शब्दों में कहा जाय, तो उसका सर्वनाश हो जाता है।

७-इस साधना से साधक को ऐसी सिद्धि प्राप्त हो जाती है, कि वह किसी भी प्रकार के असंभव कार्य को संभव कर सकता है, अकेला कहीं पर भी विचरण कर सकता है, उसे किसी प्रकार का कोई भय नहीं रहता, उस पर कोई भी मारण प्रयोग या तांत्रिक प्रयोग नहीं कर सकता, और संसार का कोई व्यक्ति उसको नुकसान नहीं पहुंचा सकता।

कृत्या यन्त्र तीव्र यन्त्र है, और जिस घर में यह विशेष यन्त्र स्थापित रहता है, उस घर में रोग, शोक, दुःख अपने स्थान छोड़ देते हैं, क्योंकि कृत्या अपनी शक्ति से तीव्र बाधा को भी वश में कर देती है।

किसी अमावस्या की रात्रि को आसन पर बैठ जाय और यन्त्र की पूजा कर सबसे पहले दाहिने हाथ में जल ले कर कहे, कि मैं यह ११ दिन की साधना कृत्या सिद्धि के लिए कर रहा हूं।

इसके बाद बांएं हाथ में जल ले कर निम्न मन्त्र से अपने शरीर को वज्र की तरह मजबूत बना लें, जिससे आपके शरीर को नुकसान न पहुंचे।

देह रक्षा मन्त्र

।। ॐ ब्रह्म सूत्र समस्त मम देह आबद्ध-
आबद्ध वज्र देह फट् ।।

इस प्रकार दस बार बोल कर अपने शरीर पर जल छिड़कें।

दस दिशा बन्धन

फिर बांएं हाथ में चावल लेकर दसों दिशाओं की ओर फेंकें जिससे कि दिशा बन्धन हो सके, और पूर्णता के साथ साधना सम्पन्न कर सकें।

दिशा बन्धन मन्त्र

।। ॐ शिवकृत्या प्रयोगायै दश दिशा बन्धनायै
क्रीं क्रीं फट् ।।

इसके बाद शिव का और यन्त्र का पूजन करें, और फिर मूल मन्त्र जप करें —

कृत्या मूल मन्त्र

।। ॐ क्लीं-क्लीं शत्रुणां मोहयै उच्चाटयै मारयै वचनसिद्धि मम आज्ञा पालय पालय कृत्या सिद्धि फट् ।।

इस मन्त्र की ग्यारह माला मन्त्र जप उसी स्थान पर बैठे रहते हुए करना आवश्यक है, बीच में उठना नहीं है, कई बार इस साधना में साधक को ऐसा लगता है, कि कोई मुझे बुला रहा है, अथवा उसका ध्यान विचलित होता है, लेकिन साधक को अपना पूरा ध्यान केन्द्रित करते हुए मन्त्र जप करते रहना है।

इस प्रकार ११ दिन तक प्रयोग करें, और उसके बाद उस यन्त्र को अपने गले में धारण कर लें, या बांह पर बांध लें, तो साधक अद्भुत शक्ति और सामर्थ्य अनुभव करने लगता है, उसके चेहरे पर भव्य तेजस्विता दृष्टिगोचर होने लगती है, और एक प्रकार से उसे दसों महाविद्याओं से भी श्रेष्ठ तन्त्र की अद्भुत शक्ति कृत्या सिद्ध हो जाती है।

गुरु चिन्तन

गूढविद्या जगन्माया देहेचाज्ञानसंभवा।
उदय स्वप्रकाशेन गुरु शब्देन कथ्यते ।।

मैं जन्म लेता हूं, मैं मरता हूं, ये दृश्यमान वस्तुजात मेरे हैं, इस अज्ञान जन्य रहस्य पूर्ण भ्रम में आबद्ध जीव को अपनी विशिष्ट अनुकम्पा से मुक्ति पथ की ओर ले जाने वाला गुरु होता है।

गुरुर्मूर्तिं स्मरेन्नित्यं गुरु नाम सदा जपेत्।
गुरोराज्ञां प्रकुर्वीत गुरोरन्यन्न भावयेत् ।।

गुरु मूर्ति का नित्य स्मरण, गुरु नाम का सदैव जप एवं गुरु आज्ञा का अहर्निश पालन करते हुए, शिष्य गुरु के अतिरिक्त अन्य कोई चिन्तन ही न करे।

सरलता में ही सिद्धि छिपी है

साधना के पांच विशिष्ट प्रयोग

प्रत्यक्ष अनुभव के आधार पर

पूज्य गुरुदेव अपने शिष्यों को कई बार, उनकी समस्याओं को सुनते हुए समाधान हेतु छोटे प्रयोग बताते हैं, और जिन व्यक्तियों ने भी इन प्रयोगों को किया है, उन्हें प्रत्यक्ष तत्काल लाभ प्राप्त हुआ है, आप भी इन्हें अक्षरशः सम्पन्न करें, पूर्ण अहोभाव से, समर्पण भाव से।

सामान्य रूप से साधना से यही अर्थ लगाया जाता है, कि लम्बा-चौड़ा अनुष्ठान होगा, संस्कृत में बड़े-बड़े मन्त्र होंगे, पूजा के लिए योग्य जानकार पंडित की आवश्यकता होगी, जबकि वास्तविक रूप से ऐसी स्थिति नहीं है, जब साधक स्वयं साधना करता है, स्वयं प्रयोग सम्पन्न करता है, तो उसे सफलता जल्दी प्राप्त होती है, रहस्य का एक द्वार खुलता है, जो जीवन में आनन्द की अनन्त सम्भावनाएं समेटे होता है, नीचे लिखे प्रयोगों को समझें, और उन्हें स्वयं सम्पन्न करें, ये सभी प्रयोग जीवन से जुड़े हैं, जीवन की समस्याओं के निराकरण हेतु सहायक हैं—

१- हनुमान साधना

हनुमान शक्तिशाली, पराक्रमी, संकटों का नाश करने वाले और दुःखों को दूर करने वाले महावीर हैं, इनके नाम का स्मरण ही अपने आपमें साहस और शक्ति प्रदान करने वाला है और यदि साधना द्वारा श्री हनुमान के प्रत्यक्ष दर्शन हो जांय, तो फिर साधक को शक्ति के लिए

किसी दूसरे के सामने हाथ फैलाने की आवश्यकता ही नहीं है।

मंगलवार के दिन साधक सायंकाल सूर्यास्त के पश्चात् स्नान कर लाल धोती पहिन कर, शरीर पर लाल धोती ओढ़ कर, लाल रंग के आसन पर बैठें, अपना मुंह दक्षिण दिशा की ओर रखें, अपने सामने **रक्त चंदन से निर्मित मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त हनुमान महावीर मूर्ति** को एक ताम्र पात्र में स्थापित करें।

इस मूर्ति का निर्माण विशेष मुहूर्त में ही किया जाता है, और जब तक इसकी प्राण प्रतिष्ठा नहीं कर दी जाती, तब तक यह केवल एक मूर्ति ही रहती है, प्राण प्रतिष्ठा से इसमें चेतना-तत्व आ जाता है, इसके बाद इस मूर्ति की पूजा करें, और पूरी मूर्ति पर सिन्दूर का तिलक लगावें, और सारे मूर्ति पर भी सिन्दूर मल दें, फिर गुड़, घी और आटे से बनी हुई रोटी को मिला कर लड्डू बनावें, उसका भोग लगावें।

साधक को चाहिए कि इसके बाद नीचे लिखे मन्त्र को मात्र १५०० बार उच्चारण कर वहीं भूमि पर पूजा स्थान में ही सो जांय, यह साधना रात्रिकालीन साधना है, अतः रात को ही इस मन्त्र का जप करें।

मन्त्र

॥ ॐ नमो हनुमन्ताय आवेशय आवेशय स्वाहा ॥

इस प्रकार नित्य करें, जो नैवेद्य हनुमान जी के सामने रखा है, वह आठों पहर रखा रहे, और दूसरी रात्रि को वह नैवेद्य किसी दूसरे पात्र में रख दें, और नया नैवेद्य हनुमान जी को चढ़ा दें, इस प्रकार मात्र ११ दिन करें।

यह निश्चित है, कि ११वें दिन हनुमान जी साधक को प्रत्यक्ष दर्शन देंगे, और उसके प्रश्नों का उत्तर देंगे, अथवा जिस निमित्त यह प्रयोग किया गया है, वह कार्य निश्चय ही सम्पन्न होगा।

जब प्रयोग पूरा हो जाय, तो वह एकत्र किया हुआ नैवेद्य या तो किसी गरीब व्यक्ति को दे दें अथवा दक्षिण दिशा में घर के बाहर भूमि खोद कर गाड़ दें।

इस प्रयोग से मैंने बड़ी विपत्तियों को अपने ऊपर से टाला है, भयंकर रोगों से छुटकारा दिलाया है, और सजा पाये हुए लोगों को उससे मुक्त कराया है, वास्तव में ही यह प्रयोग अपने आप में अचूक और अद्वितीय है।

२- कर्णपिशाचिनी साधना

सैकड़ों व्यक्तियों ने कर्णपिशाचिनी साधना को सम्पन्न करने का विचार मन में संजोया है, और इसे यथा संभव सम्पन्न भी किया है, परन्तु फिर भी उन्हें सफलता प्राप्त नहीं होती।

इस साधना को सम्पन्न करने पर ज्यों ही साधक किसी प्रश्न को पूछता है, तो अदृश्य रूप में कर्णपिशाचिनी उसके कान में उस प्रश्न का उत्तर दे देती है, भूतकाल की तो कोई भी बात छुपी हुई नहीं रहती, यहां तक की सामने वाले पुरुष या स्त्री की गोपनीय से गोपनीय बात भी साधक को पता चल जाती है।

जब साधक इस प्रकार की गोपनीय बातें स्पष्ट कर देता है, तो सामने वाला व्यक्ति चमत्कृत हो उठता है, और अपने आपमें आश्चर्य करने लगता है, यह सब कर्णपिशाचिनी साधना के माध्यम से संभव है।

किसी भी मंगलवार की सायंकाल को एक पात्र में तालाब से मिट्टी ले कर आयें और उस मिट्टी को अपने पूजा स्थान में एक दूसरे साफ पात्र में डाल कर थोड़ा जल डालें तथा इसके मध्य में **मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त 'कर्णपिशाचिनी त्रिशूल'** गाड़ दें, तत्पश्चात् इसका जल, कुंकुम, अक्षत, पुष्प और नैवेद्य से पूजन करें, और उसके सामसे घी का दीपक जला दें, साधक स्वयं दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर के बैठें, फिर निम्न मन्त्र का

११०० बार उच्चारण करें, इस प्रकार दिन में भी ११०० बार उच्चारण करें, और रात्रि को भी ११०० बार उच्चारण करें, इस बात का ध्यान रखें, कि दिन में केवल घी का दीपक लगावें, तो रात्रि को घी का और तेल का दोनों का दीपक लगावें, इसमें किसी भी प्रकार के तेल का प्रयोग किया जा सकता है।

इस प्रकार यह ११ दिन की साधना है, और ऐसा करने पर कर्णपिशाचिनी पूर्ण रूप से सिद्ध हो जाती है।

मन्त्र

ॐ नमः कर्णपिशाचिनी, अमोघ-सत्यवादिनी मम कर्णेअवतरावतार अतीतानागत-वर्तमानानि दर्शय दर्शय अमुकं भूतं भविष्यं कथय कथय ह्रीं कर्णपिशाचिनी स्वाहा ॥

जब यह प्रयोग पूरा हो जाय, इसके बाद साधक किसी भी व्यक्ति के बारे में यदि कोई प्रश्न करे, तो उसका उत्तर उसके कान में स्वतः सुनाई देने लगता है, और वह उत्तर पूर्णतः सत्य होता है, यह प्रयोग अपने आप अद्‌भुत है।

३- रोगमुक्त रुद्र प्रयोग

भगवान रुद्र कष्ट को दूर करने वाले, मृत्यु को समाप्त करने वाले, और रोगों का नाश करने वाले हैं, यह प्रयोग अत्यधिक उपयोगी है, यदि कोई भी व्यक्ति या पुरुष रोगयुक्त हो, और काफी इलाज कराने पर भी उस रोग से छुटकारा न मिलता हो अथवा अचानक बीमार की हालत खराब हो गई हो, और वह मरणासन्न हो गया हो, तो यह प्रयोग अपने आप में अचूक है, और एक प्रकार से देखा जाय तो उसे नया जीवन देने वाला है।

स्नान कर साधक सफेद धोती धारण कर सफेद आसन पर बैठें, साधक का मुंह उत्तर दिशा की ओर होना चाहिए, अपने सामने **मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त भगवान रुद्र का चित्र एवं महामृत्युंजय रुद्र यन्त्र** स्थापित करें, और इस रुद्र यन्त्र का पंचामृत से पूजन करें, उस पर बिल्व पत्र चढ़ाएं।

इसके बाद साधक सोमवार की रात्रि से इस प्रयोग को प्रारम्भ करे, और निम्न मन्त्र का मात्र १०८ बार उच्चारण करे, इस प्रकार ११ दिन करने पर यह प्रयोग सिद्ध हो जाता है।

मन्त्र

ॐ भगवान देव-देवेश शूल-मृद-वृषवाहन ।
इष्टानिष्टे समाचक्ष्य मम सुप्तस्य शाश्वते ॥
ॐ नमो जाय त्रिनेत्राय पिंगलाय महात्मने ।
वामाय विश्व-रूपाय स्वप्नाधिपतये नमः ॥
स्वप्नं कथ्य मे तुभ्यं सर्व-कार्येष्वशेषतः ।
क्रिया सिद्धि विधास्यामि त्वत्प्रसादान्महेश्वर ॥

जब साधना सिद्ध हो जाय तब जरूरत पड़ने पर किसी भी रोगी के सिरहाने किसी तांबे के पात्र में थोड़ा सा जल ले कर इस मन्त्र का मात्र तीन बार उच्चारण कर वह जल थोड़ा सा तो रोगी को पिला दें और बाकी उसके शरीर पर छिड़क दें, तो आश्चर्यजनक परिणाम प्राप्त होता है, और वह मृत्यु के पंजे से छूट कर तेजी के साथ स्वस्थ होने लगता है।

वास्तव में ही मैंने इस प्रयोग को जितनी बार भी आजमाया है, उतनी ही बार मुझे पूर्ण सफलता प्राप्त हुई है।

४- स्वप्नेश्वरी प्रयोग

यह प्रयोग अपने आपमें अत्यन्त महत्वपूर्ण है, इसके माध्यम से साधक रात्रि को किसी भी प्रश्न का उत्तर पूर्णता के साथ जान सकता है, भविष्य

में क्या घटित होने वाला है, और क्या होगा, इन बातों की जानकारी साधक रात्रि को इस प्रयोग के माध्यम से जान सकता है।

यह प्रयोग किसी भी रात्रि सम्पन्न किया जा सकता है, अपने सामने **मन्त्र सिद्ध स्वप्नेश्वरी चित्र** मढ़वा कर रख दें, और नित्य उसका पूजन करें, इसके साथ **मन्त्र सिद्ध स्वप्नेश्वरी यन्त्र** का पूजन कर इस यन्त्र को अपने हाथ में मुट्ठी में बन्द कर मन्त्र जप करना है, कुल दस हजार मन्त्र जप करना आवश्यक है।

साधक एक समय भोजन करें, पीले वस्त्र धारण करें, मन्त्र जप के समय पश्चिम दिशा की ओर मुंह होना चाहिए।

मन्त्र

॥ ॐ ह्रीं मनसे स्वप्नेश्वरि विचार्य विद्यं
वद वद स्वाहा ॥

जब मन्त्र अनुष्ठान पूरा हो जाय तो जिस प्रश्न का उत्तर जानना हो, वह प्रश्न कागज पर लिख कर स्वप्नेश्वरी देवी के चित्र के सामने रख दें, एक काले कपड़े में स्वप्नेश्वरी देवी यन्त्र अपने सिरहाने रख दें और मात्र १०८ बार मन्त्र जप कर साधक पूजा स्थान में ही सो जाय, रात्रि में स्वप्नेश्वरी देवी उसके प्रश्न का स्पष्ट उत्तर देती है और साधक तत्काल इस उत्तर को ग्रहण कर लेता है, और यह पूर्णता सही तथा प्रामाणिक होता है।

५- मणिभद्र प्रयोग

यह वशीकरण की दृष्टि से अपने आपमें आश्चर्यजनक प्रयोग है, इसके माध्यम से किसी भी पुरुष या स्त्री को तो पूर्णतः वश में किया ही जाता है, साथ ही अपने शत्रु को भी अपने वश में किया जा सकता है, अपने अधिकारी, पत्नी, पति, पुत्र या किसी भी व्यक्ति को इसके द्वारा पूर्णतः वश में करके उससे जीवन भर मनोवांछित कार्य सम्पन्न करवाया जा सकता है।

किसी भी शुक्रवार की रात्रि को सफेद आसन बिछा कर सफेद धोती या साड़ी पहन कर पूर्व की ओर मुंह कर बैठ जायं, और सामने तेल का दीपक लगा लें, इसके बाद किसी पात्र में **मन्त्रसिद्ध एवं प्राण चैतन्य मणिभद्र यन्त्र** को स्थापित कर उस यन्त्र की पूजा करें और उस पर लाल पुष्प चढ़ाएं, फिर **'मूंगे की माला'** से निम्न मन्त्र का केवल १०८ बार उच्चारण करें—

मन्त्र

॥ ॐ नमो मणिभद्राय चेटकाय अमुकं
पूर्ण वश्यं कुरु कुरु स्वाहा ॥

इस मन्त्र में जहां अमुक शब्द आया है उस स्थान पर उसका नाम उच्चरित करें, जिसे आपको वश में करना है, इस प्रकार यह प्रयोग मात्र ११ दिन का है।

११ दिन के भीतर-भीतर आप जिस प्रकार से चाहते हैं उस प्रकार से कार्य सम्पन्न हो जायेगा, और वह निश्चय ही वश में होकर आप जिस प्रकार से उसे आज्ञा देंगे, उसी प्रकार से कार्य करेगा तथा वह जीवन भर वश में रहेगा।

मैंने इस प्रयोग को कई बार आजमाया है, और हर बार यह पूर्णरूप से प्रामाणिक सिद्ध हुआ है।

ऊपर लिखे सारे प्रयोगों को साधक द्वारा स्वयं संपन्न करना चाहिए, और इन प्रयोगों में विशेषता यह है, कि एक बार सम्पन्न करने पर ही लाभ प्राप्त होना प्रारम्भ हो जाता है तथा प्रत्यक्ष प्रमाण प्राप्त होता है। ●

सूर्य के समान तेजस्वी बनना है

तो

मकर संक्रान्ति महापर्व

पर

सूर्य-लक्ष्मी-विष्णु साधनाएं

एक बार अवश्य आजमाएं

साधना के लिए तीन पर्व विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं, नवरात्रि, दीपावली और संक्रान्ति पर्व, दीपावली तथा नवरात्रि के बारे में तो हर कोई जानता है, लेकिन संक्रान्ति में ऐसा क्या है, क्यों इसका महत्व है ?

इस वर्ष संक्रान्ति पर्व के तीन दिन १३-१४-१५ जनवरी को विशेष मुहूर्त बना है, ये तीन दिन लक्ष्मी, सूर्य और विष्णु की साधना के दिन हैं।

नव ग्रहों में सूर्य ही प्रधान ग्रह देव हैं, सूर्य के बिना जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती है, सूर्य ही जीवन तत्व को अग्रसर करने वाला, उसे चैतन्य बनाने वाला, प्रकाश देने वाला, मूल तत्व है।

मकर संक्रान्ति का महत्व इस कारण सबसे अधिक बढ़ जाता है, कि उस समय सूर्य उस कोण पर आ जाता है, जब वह अपनी सम्पूर्ण रश्मियां मानव पर उतारता है, इनको ग्रहण किस प्रकार किया जाय, इसके लिए चैतन्य

होना आवश्यक है, तभी ये रश्मियां भीतर की रश्मियों के साथ मिल कर शरीर के कण-कण को जाग्रत कर देती हैं, सूर्य तो ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनों की शक्तियों का स्वरूप है, इस कारण मकर संक्रान्ति पर सूर्य साधना करने से इन तीनों की साधना का लाभ प्राप्त होता है ।

शरीर और सूर्य

मनुष्य का शरीर अपने आपमें सृष्टि के सारे क्रम को समेटे हुए है, और जब यह क्रम बिगड़ जाता है, तो शरीर में दोष उत्पन्न होते हैं, जिसके कारण व्याधि, पीड़ा, बीमारी का आगमन होता है, इसके अतिरिक्त शरीर की आन्तरिक व्यवस्था के दोष के कारण मन के भीतर दोष उत्पन्न होते हैं, जो कि मानसिक शक्ति, इच्छा को हानि पहुंचाते हैं, व्यक्ति की सोचने-समझने की शक्ति, बुद्धि क्षीण होती है, इन सब दोषों का नाश सूर्य तत्व को जाग्रत कर किया जा सकता है, क्या कारण है कि एक मनुष्य उन्नति के शिखर पर पहुंच जाता है, और एक व्यक्ति पूरे जीवन सामान्य ही बना रहता है, दोनों में भेद शरीर के भीतर जाग्रत सूर्य तत्व का है, नाभि चक्र, सूर्य चक्र का उद्‌गम स्थल है, और यह अचेतन मन के संस्कार तथा चेतना का प्रधान केन्द्र है, शक्ति का स्रोत बिन्दु है, साधारण मनुष्यों में यह तत्व सुप्त होता है, न तो इनकी शक्ति का सामान्य व्यक्ति को ज्ञान होता है और न ही वह इसका लाभ उठा पाता है, इस तत्व को अर्थात् भीतर के मणिपुर सूर्य चक्र को जाग्रत करने के लिए बाहर के सूर्य तत्व की साधना आवश्यक है, बाहर का सूर्य अनन्त शक्ति का स्रोत है, और इसका जब भीतर के सूर्य चक्र से जोड़ दिया जाता है, तो साधारण मनुष्य भी अनन्त मानसिक शक्ति का अधिकारी बन जाता है, और जब यह तत्व जाग्रत हो जाता है, तो बीमारी, पीड़ा, बाधाएं उस मनुष्य के पास आ ही नहीं सकती हैं।

बाहर का यह सुर्य तो साल के ३६५ दिन जाग्रत है, लेकिन इसके द्वारा भीतर के सूर्य तत्व को कुछ विशेष मुहूर्तों में तत्काल जाग्रत किया जा सकता है, और इसके लिए मकर संक्रान्ति से बढ़ कर कोई सिद्ध मुहूर्त नहीं है।

मकर संक्रान्ति और महालक्ष्मी

मकर संक्रान्ति के दिन ही भगवती लक्ष्मी का प्रादुर्भाव हुआ, जब लक्ष्मी की उत्पत्ति देवासुर संग्राम के अवसर पर समुद्र मंथन के द्वारा हुई, तब वह कन्या थी और इसलिए जिस स्थान पर समुद्र मंथन हुआ, जिस स्थान पर समुद्र के गर्भ से लक्ष्मी की उत्पत्ति हुई, उस स्थान को आज **"कन्याकुमारी"** कहते है, जो भारत-वर्ष के दक्षिणी छोर पर है, यह एक ऐसा स्थान है, जहां तीन समुद्र एक साथ मिलते हैं, और यहीं पर कन्याकुमारी का पवित्र और श्रेष्ठ मन्दिर है, हजारों-लाखों लोग प्रति वर्ष भावरतवर्ष के दक्षिण में कन्याकुमारी स्थान पर जाते हैं और उसकी प्राकृतिक छटा देखते हैं, समुद्र का पारस्परिक मिलन और तीन समुद्रों का संगम देखते हैं, जहां का सूर्योदय विश्व प्रसिद्ध है, जो भी कन्याकुमारी जाता है, वह प्रातःकाल उठ कर छत पर खड़े हो कर सूर्योदय को देखने की अभिलाषा मन में अवश्य रखता है, क्योंकि कन्याकुमारी का सूर्योदय अपने आपमें अन्यतम है, ऐसा लगता है कि जैसे समुद्र में से धीरे-धीरे स्वर्ण कलश बाहर निकल रहा हो, ठीक वैसा ही सोने की तरह चमचमाता हुआ कलश जिसमें अमृत और तेजस्विता भरी हुई है, चारों तरफ अगाध समुद्र है, जहां तक दृष्टि जाती है समुद्र की लहरें दिखाई देती हैं और उन लहरों के बीच जब सूर्य बाहर निकलता है तो अपने आपमें एक अद्‌भुत और अनिवर्चनीय दृश्य दिखाई देता है ।

समुद्र मंथन के उपरान्त जो चौदह रत्न निकले, उन चौदह रत्नों में लक्ष्मी भी एक रत्न थी, मगेर वह कन्या थी, अविवाहित थी, कुंवारी थी और इस के प्रतीक स्वरूप उस स्थान पर कन्याकुमारी मन्दिर का निर्माण किया गया, एक पवित्र भूमि का आविर्भाव हुआ और आज भी श्रद्धालु लोग उस कुंवारी लक्ष्मी के विग्रह को देखने के लिए हजारों-हजारों की संख्या में जाते हैं ।

इसके कुछ ही समय बाद भगवान विष्णु अवतरित हुए और उस समुद्र के किनारे ही लक्ष्मी को पत्नी रूप में

स्वीकार किया, और यही समय मकर संक्रान्ति पर्व कहलाता है, जब कुंवारी कन्या का पाणिग्रहण भगवान विष्णु के साथ होता है, इसीलिए इस दिन का विशेष महत्व है।

जो साधक मकर संक्राति के विधान को पूरी तरह से सम्पन्न करता है, इस विशेष मुहूर्त पर लक्ष्मी की आराधना करता है, सूर्य की आराधना करता है, तो जहां एक ओर उसके जीवन के दोष दूर होते हैं, पीड़ा, व्याधि बीमारी का निवारण होता है, वहीं लक्ष्मी साधना से जीवन की दरिद्रता, दुर्भाग्य, कर्ज का नाश होता है, और लक्ष्मी का स्थायी निवास बन जाता है।

साधना के तीन दिवस

मकर संक्रान्ति महापर्व को तीन भागों में बांटा जा सकता है, इसके तीन दिवस हैं, इसमें प्रथम दिवस लक्ष्मी साधना सम्पन्न की जाती है, दूसरे दिवस को विष्णु साधना और तीसरे दिवस को सम्पूर्ण बनने की सूर्य साधना सम्पन्न की जाती है, इन तीनों साधनाओं को एक साथ सम्पन्न करने का पूरे वर्ष में मकर संक्रान्ति के अलावा और कोई श्रेष्ठ मुहूर्त ही नहीं है।

मकर संक्राति की महालक्ष्मी साधना

इस महापर्व के प्रथम दिन सोमवार तिथि अष्टमी, १३ जनवरी ९२ को **महालक्ष्मी सिद्धि दिवस** है. और इस दिन महालक्ष्मी के विशेष स्वरूप की विशेष प्रकार से साधना सम्पन्न की जाती है।

इस दिन लक्ष्मी के सिंहवाहिनी रूप और कमलधारिणी स्वरूप की साधना की जाती है, और **लक्ष्मी उपनिषद** में लिखा है, कि जो साधक मकर संक्रान्ति पर लक्ष्मी के इस स्वरूप का चिन्तन करता है, उसके घर में लक्ष्मी स्थायी रूप से निवास करती है, क्योंकि सिंह समस्त दुर्भिक्ष, अभाव और दुर्भाग्य को समाप्त करने वाला है, रोग और पापों का भक्षण करने वाला है, आलस्य और जीवन की न्यूनताओं को दूर करने वाला है, वहीं कमल जीवन को अलौकित करने वाला सदैव चैतन्य तत्व है अतः इस विशेष दिन लक्ष्मी के इस विशेष रूप की साधना सम्पन्न करने का तात्पर्य जीवन में पूर्णता प्राप्त करना है।

सिंहवाहिनी महालक्ष्मी यन्त्र

इस यन्त्र का निर्माण कुछ विशेष मुहूर्तों में ही किया जाता है, और सबसे बड़ी बात यह है, कि इसकी स्थापना केवल मकर संक्रान्ति कल्प में ही की जाती है, ऐसा महायन्त्र घर में स्थापित होने पर कर्ज समाप्त हो जाते हैं, घर के लड़ाई झगड़े दूर होते हैं, व्यापार वृद्धि होने लगती है, आर्थिक उन्नति और राजकीय दृष्टि से सम्मान प्राप्त होता है।

लक्ष्मी प्राप्ति यन्त्र
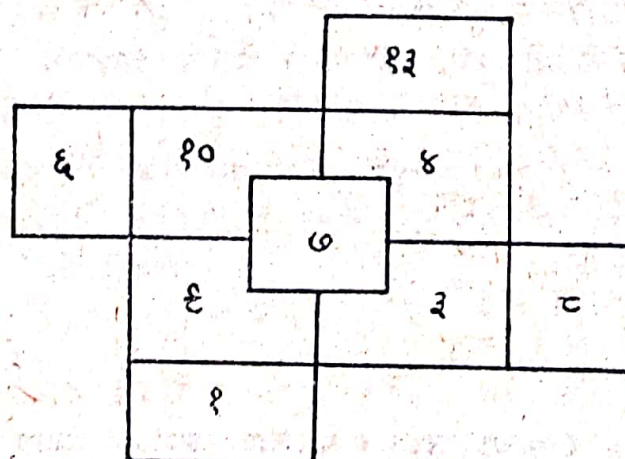
इस महायन्त्र के सम्बन्ध में लक्ष्मी से सम्बन्धित प्रत्येक ग्रन्थ में विशेष वर्णन आया है, प्रत्येक ऋषि ने इसके महत्व को स्वीकारा है, यहां तक कि तन्त्र के सर्वोपरि **गुरु गोरखनाथ जी** ने भी इस यन्त्र के तांत्रिक महत्व और मांत्रिक महत्व को विशिष्ट बताया है।

साधना प्रयोग

इस साधना का विधान अत्यन्त सरल है, और साधक स्वयं इसे सम्पन्न करें, इस हेतु आवश्यक सामग्री की व्यवस्था पहले से कर लें, मकर संक्रान्ति कल्प के प्रथम दिन प्रातःकाल उठकर स्नान कर अपने पूजा स्थान में बैठ जांय और सामने एक लकड़ी के बाजोट पर पीला रेशमी वस्त्र बिछा कर उस पर इस महायन्त्र को स्थापित कर दें, इससे पहले अलग पात्र में इस महायन्त्र को जल से तथा दूध, दही, घी, शहद और शक्कर से स्नान कर पुनः शुद्ध जल से धो-पौंछ कर इसे रेशमी वस्त्र पर स्थापित कर दें, और केसर से इस महायन्त्र पर नौ बिन्दियां लगायें, जो नव निधि की प्रतीक हैं।

इसके बाद हाथ में जल ले कर विनियोग करें।

विनियोग

अस्य श्री महालक्ष्मी हृदयमालामन्त्रस्य भार्गव ऋषिः आद्यादि श्री महालक्ष्मी देवता, अनुष्टुप-आदिनानाछन्दांसि, श्री बीजम् ह्रीं शक्तिः, ऐं कीलकम् श्री महालक्ष्मी प्रसीद सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

इसके बाद साधक हाथ में जल ले कर संकल्प करें, कि "मैं अमुक गौत्र, अमुक पिता का पुत्र, अमुक नाम का साधक मकर संक्रान्ति पर्व पर भगवती लक्ष्मी को नवनिधियों के साथ अपने घर में स्थापित करने के लिए प्रयोग सम्पन्न कर रहा हूं।"

ऐसा कह कर हाथ में लिया हुआ जल जमीन पर छोड़ दें, और फिर यन्त्र के सामने शुद्ध घृत के पांच दीपक लगायें, सुगन्धित अगरबत्ती प्रज्वलित करें, और दूध के बने हुए प्रसाद का नैवेद्य समर्पित करें, इसके बाद हाथ जोड़ कर ध्यान करें।

ध्यान

हस्तद्वयेन कमले धारयन्ती स्वलीलया।
हारनूपुरसंयुक्तां लक्ष्मीं देवी विचिन्तये॥

इसके बाद साधक लक्ष्मी माला से निम्न मन्त्र की २१ माला मन्त्र जप करें, इसमें **"लक्ष्मी माला"** का ही प्रयोग होता है।

महामन्त्र

॥ ॐ श्रीं ह्रीं ऐं महालक्ष्म्यै कमलधारिण्यै
सिंहवाहिन्यै स्वाहा ॥

इसके बाद साधक लक्ष्मी की आरती करें और यन्त्र को अपनी तिजोरी में रख दें या पूजा स्थान में रहने दें तथा प्रसाद को घर के सभी सदस्यों में वितरित कर दें, इस प्रकार मकर संक्रान्ति कल्पवास के प्रथम दिन यह महत्वपूर्ण साधना सम्पन्न की जाती है।

मकर संक्रान्ति-विष्णु नृसिंह साधना

वर्तमान युग में विष्णु के नृसिंह स्वरूप की साधना ही सर्वश्रेष्ठ है, क्योंकि इस रूप में जहां एक ओर सौम्यता है, वहीं दूसरी ओर शत्रुनाश का पराक्रम भी है, इस स्वरूप की साधना करने से तीन प्रकार की बाधाएं मुख्य रूप से दूर होती हैं, प्रथम तो साधक को भय मुक्ति प्राप्त होती है, दुःस्वप्नों से शान्ति मिलती है, कर्ण रोग, नेत्र रोग, शिरो रोग, एवं कंठ रोग दूर हो जाते हैं, शत्रु तथा विवाद में विजय प्राप्त होती है।

मकर संक्रान्ति कल्प के दूसरे दिन यह साधना सम्पन्न की जाती है, इस हेतु साधक **"विष्णु नृसिंह महायन्त्र"**, बत्तीस दीपक, केसर, चावल, नैवेद्य, पुष्प की व्यवस्था पहले से कर लें।

प्रातः स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर अपने सामने एक बड़े लकड़ी के पीढ़े पर लाल वस्त्र बिछाएं, मध्य में एक पात्र में, **विष्णु नृसिंह यन्त्र** की स्थापना करें, पीढ़े के चार कोनों में चार पत्ते रख कर उस पर चावल की ढेरी बनाएं और चार सुपारी रखें, तथा इन चारों कोनों में श्री, ह्रीं, धृति, धुष्टि का ध्यान करते हुए पूजा करें।

इसके पश्चात् विष्णु नृसिंह यन्त्र के सामने बत्तीस तेल के दीपक जला दें, और प्रत्येक के आगे नृसिंह स्वरूप एक-एक पत्ते पर चावल की ढेरी पर सुपारी रख कर श्री विष्णु के बतीस स्वरूपों की पूजा निम्न मन्त्रों का उच्चारण करते हुए सम्पन्न करें —

ॐ कृष्णाय नमः
ॐ माहाधाराय नमः
ॐ भीषणाय नमः
ॐ करालाय नमः
ॐ दैत्यान्ताय नमः
ॐ रक्ताक्षाय नमः
ॐ आंजनाय नमः
ॐ सुधोणाय नमः
ॐ विश्वाक्षाय नमः
ॐ रुद्राय नमः
ॐ भीमाय नमः
ॐ उज्ज्वलाय नमः
ॐ विकरालाय नमः
ॐ मधुसूदनाय नमः
ॐ पिंगलाक्षाय नमः
ॐ दीरातेजसे नमः
ॐ हनवे नमः
ॐ राक्षसान्ताय नमः
ॐ विशालाय नमः
ॐ हयग्रीवाय नमः
ॐ मेघनादाय नमः
ॐ कुम्भकर्णाय नमः
ॐ तीव्रतेजसे नमः
ॐ महोग्राय नमः
ॐ विघ्नक्षमाय नमः
ॐ धूम्रकेशवाय नमः
ॐ धनस्वराय नमः
ॐ मेघवर्णाय नमः
ॐ कृतान्तकाय नमः
ॐ अग्निवर्णाय नमः
ॐ विश्वभूषणाय नमः
ॐ महासेनाय नमः

इस प्रकार श्री विष्णु के ३२ स्वरूपों की पूजा कर साधक विष्णु नृसिंह यन्त्र का पूजन सम्पन्न करें, उस पर केसर से तिलक लगायें, और घी का दीपक जलायें, अब अपने विशेष कार्य सिद्धि का संकल्प करते हुए विष्णु मन्त्र का जप प्रारम्भ करें, साधक के लिए यह आवश्यक है, कि उसी स्थान पर बैठ कर कम से कम पांच माला का अवश्य जप करें।

नृसिंह पूजन यन्त्रम्
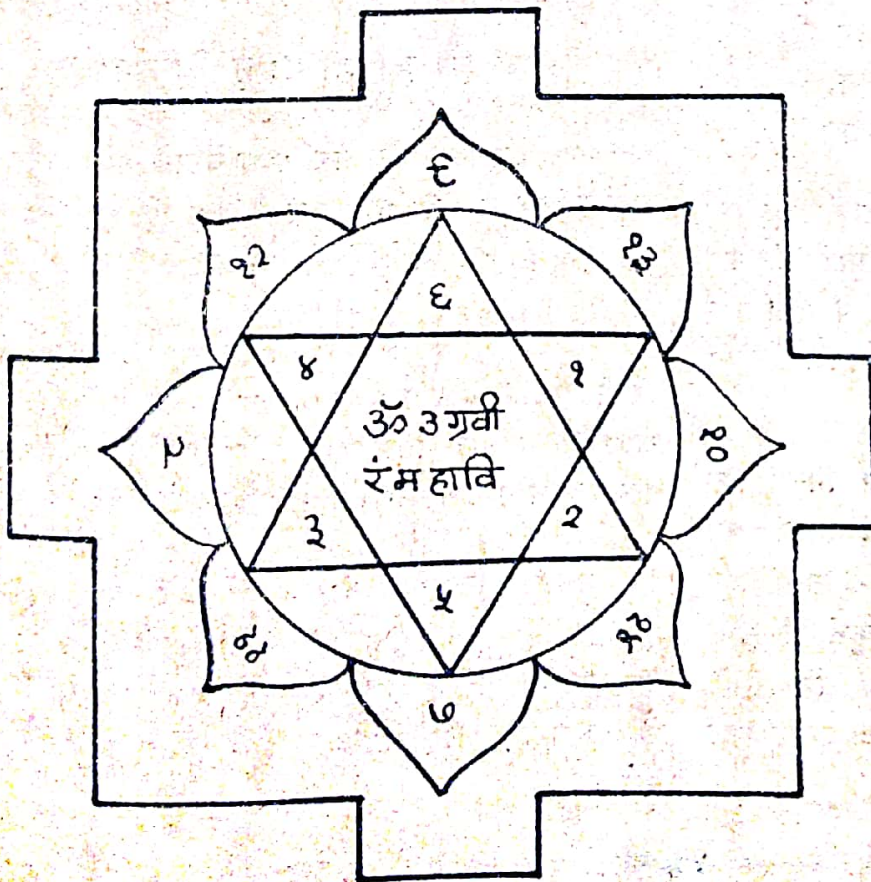
यहां साधकों हेतु विशेष रूप से **लक्ष्मी नृसिंह मन्त्र** दिया जा रहा है, और इस साधना में सिद्धि प्राप्त होने पर साधक को अपनी मनोकामना पूर्ति में किसी प्रकार की बाधा का सामना नहीं करना पड़ता है।

लक्ष्मी नृसिंह मन्त्र

ॐ श्रीं ह्रीं जयलक्ष्मी प्रियाय नित्यप्रमुदितचेतसे लक्ष्मी श्रिताद्ध-देहाय श्रीं ह्रीं नमः।

तत्पश्चात् गुरु आरती और विष्णु आरती सम्पन्न कर पूजा में रखा हुआ प्रसाद ग्रहण करें।

मकर संक्राति पर की गई यह विष्णु नृसिंह साधना साधक के भीतर के भय तत्व को पूर्ण रूप से समाप्त कर देती है, साधक की सुप्त शक्तियां जागृत होती

है, इस साधना के बिना मकर संक्रान्ति साधना अधूरी ही है।

मकर संक्रान्ति : सूर्य साधना

मकर संक्रान्ति पर्व का सबसे अधिक महत्वपूर्ण स्वरूप सूर्य साधना है सूर्य के बिना किसी भी वस्तु के दृश्य-अदृश्य की कल्पना ही नहीं की जा सकती, सूर्य के १२ स्वरूप हैं, ये बारह स्वरूप तथा इनकी बारह शक्तियां निम्न हैं-

बारह अदितीय	शक्तियां
वरुण	ईड़ा
सूर्य	सुषुम्ना
सहस्रांशु	विश्वार्चि
धाता	इन्दु
तपन	प्रमर्दिनी
सविता	प्रहर्षिणी
गभस्तिक	महाकाली
रवि	कपिला
पर्जन्य	प्रबोधिनी
त्वष्टा	नीलाम्बर
मित्र	वनान्तस्या
विष्णु	अमृताख्या

इस दिन प्रातः साधक सूर्योदय से पहले उठ कर स्नान कर श्वेत वस्त्र धारण करें, सूर्य की ओर मुंह कर सूर्य नमस्कार करें, एक ताम्र पात्र में पुष्पों के साथ तीन बार अर्घ्य अर्पित करें, इस दिन नमक तथा तेल रहित भोजन ग्रहण करना।

इस साधना के समय ऊपर लिखे हुए नियमों का पालन करते हुए साधक अपने सामने **"सूर्य यन्त्र"** को स्थापित कर उस पर चन्दन, केसर, सुपारी तथा लाल पुष्प अर्पित कर इसके साथ ही गुलाल तथा कुंकुम के साथ-साथ सिन्दूर भी अर्पित करें और अपने सामने सिन्दूर को शुद्ध जल में घोल कर दोनों ओर सूर्य चित्र बनाएं तथा पुष्पांजलि अर्पित करते हुए प्रार्थना करें—

"हे आदित्य ! आप सिन्दूर वर्णीय, तेजस्वी मुख मण्डल, कमल नेत्र स्वरूप वाले ब्रह्मा, विष्णु तथा रुद्र सहित सृष्टि के मूल कारक हैं, आपको इस साधक का नमस्कार ! आप मेरे द्वारा अर्पित कुंकुम, पुष्प, सिन्दूर एवं चन्दनयुक्त जल का अर्घ्य ग्रहण करें।"

इसके साथ ही ताम्र पात्र दोनों हाथों लेकर, जल की धारा से सूर्य को तीन बार अर्घ्य दें, अब अपने पूजा स्थान में सूर्य यन्त्र के चारों ओर एक चक्र में **'१२ सविता चक्र'** स्थापित करें, ये सविता चक्र सूर्य के १२ स्वरूप हैं, प्रत्येक सविता चक्र पर इसकी शक्ति स्वरूप एक-एक पुष्प रखें, और ऊपर दिये गये बारह स्वरूपों का उसी चक्र में ध्यान करते हुए इन सविता चक्रों की पूजा करें, तत्पश्चात् पूर्व दिशा की ओर मुंह कर सूर्य यन्त्र पर केसर, कुंकुम चढ़ाएं, तथा उसी केसर, कुंकुम से अपने तिलक कर सूर्य मन्त्र की ग्यारह माला का जप करें।

मन्त्र

।। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः ।।

मन्त्र जप की पूर्णता पर पूजा में रखे गये दीपक से आरती सम्पन्न करें और इस ज्योति पर हाथ फेर कर अपने दोनों हाथों को नेत्रों से स्पर्श करें।

मकर संक्रान्ति के दिन साधक पूजा क्रम पूर्ण कर किसी तालाब, सरिता में स्नान करें तथा इस दिन अपनी श्रद्धा के अनुसार तिल, गुड़, तिल से बनी हुई वस्तुएं इत्यादि का दान करना चाहिए।

समस्त शक्तियों के जनक सूर्य ही हैं और यह सूर्य पूजा सम्पन्न कर मकर संक्रान्ति महा कल्प की पूर्ण आहुति सम्पन्न की जाती है, सायंकाल १३ कुंवारी कन्याओं को भोजन कराएं और साधना का यह विशेष अनुष्ठान पूर्ण करें। ●

शिव साधना का अनूठा अनुष्ठान

पाशुपतेय प्रयोग

शास्त्रों में उल्लेख है, कि अर्जुन ने स्वयं भगवान शंकर की आराधना कर उनसे पाशुपत प्रयोग सीखा था, और इसी के द्वारा वे महाभारत युद्ध में विजयी हुए।

रावण ने भी भगवान शंकर की घोर तपस्या कर उन्हें प्रसन्न कर उनसे विधिवत् पाशुपत प्रयोग सीखा था, जिसके बल पर रावण अद्वितीय बन सका।

पाशुपत प्रयोग मूलतः शक्ति साधना है, और योग्य निष्ठ साधक इस प्रयोग को सम्पन्न कर सकता है, यद्यपि यह प्रयोग कठिन अवश्य है, परन्तु कई साधकों ने इस को समझा है और इसे सम्पन्न कर सफलता भी पाई है।

यह प्रयोग मुख्यतः शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने के लिए है, चाहे एक शत्रु हो या असंख्य, मात्र इस प्रयोग से ही व्यक्ति अपनी रक्षा करता हुआ पूरी तरह से शत्रुओं पर नियन्त्रण प्राप्त कर सकता है।

इसके अलावा इस प्रयोग के द्वारा व्यक्ति मोहन, वशीकरण, उच्चाटन आदि क्रियाओं से भी शत्रुओं को स्तम्भित कर सफलता प्राप्त कर सकता है, इस साधना में विचित्र अनुभव होते रहते हैं, अतः बलवान मन मस्तिष्क का स्वामी ही इस साधना को सम्पन्न करे।

यह साधना तीक्ष्ण और कठिन है, दुर्गम और असाध्य है, इसलिए साधक को पूरी क्षमता के साथ ही इस प्रकार की साधना में प्रवृत्त होना चाहिए, यह एक साधना ही हजारों साधनाओं से भारी है, इस एक साधना के द्वारा ही असम्भव से असम्भव कार्यों को सम्भव किया जा सकता है, सैकड़ों हजारों शत्रुओं पर विजय पाई जा सकती है, जीवन के कठिन और दुःखदायक क्षणों को अनुकूल बनाया जा सकता है, तथा व्यक्ति भौतिक दृष्टि से पूर्णता प्राप्त कर सकता है, इस क्रिया के द्वारा किसी को भी सम्मोहित कर, वशीकरण के द्वारा अनुकूल बनाया जा सकता है।

इस साधना को किसी भी महीने की शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से प्रारम्भ किया जा सकता है, प्रारम्भ करने से पूर्व साधक को निम्न नौ तथ्यों का दृढ़ता से पालन करना चाहिए—

१-पूरे साधना काल में दाढ़ी न करावें, और क्षौर कर्म न करें।

२-जमीन पर सोवें, और केवल एक चटाई का ही उपयोग करें।

३-पूर्णतः ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करें और गायन, संगीत, वाद्य आदि से दूर रहें।

४-साधना काल में मौन रहें और किसी से कोई बात न करें, अत्यन्त ही आवश्यक होने पर लिख कर या संकेत से कुछ कहा जा सकता है।

५-अन्न स्वीकार न करें, केवल दूध या फल लें।

६-पूरे साधना काल में किसी भी प्रकार का व्यसन आदि का प्रयोग न करें।

७-साधनाकाल में मात्र काले वस्त्र ही धारण करें और वस्त्रों में भी एक काली धोती पहन लें, तथा एक काली धोती ओढ़ लें, इसके अलावा शरीर पर किसी प्रकार का कोई वस्त्र न हो।

८-साधना कक्ष में साधक के अतिरिक्त कोई भी अन्य व्यक्ति उस कक्ष में प्रवेश न करे।

९-साधना काल में किसी भी प्रकार का व्यवधान नहीं होना चाहिए, किसी भी प्रकार की परिस्थितियों में विचलित न हों।

साधना प्रयोग

इस साधना में शिव और शक्ति सिंहवाहिनी दुर्गा दोनों की पूजा एवं साधना सम्पन्न की जाती है, किसी भी महीने की शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से प्रारम्भ की जा सकती है, और यह साधना प्रयोग केवल रात्रि के समय ही सम्पन्न करना चाहिए।

साधना प्रारम्भ करने से पूर्व **"सिंहवाहिनी दुर्गा यन्त्र"** तथा **चित्र** अपने सामने एक लकड़ी के पट्टे पर काला वस्त्र बिछाकर स्थापित कर दें और घी का दीपक लगा दें, ये दीपक पूरी साधना के समय अखण्ड जलते रहना चाहिए। एक दूसरे बाजोट पर शिवलिंग (यह शिवलिंग किसी भी प्रकार का हो सकता है) तथा ताम्र पत्र पर उत्कीर्ण मन्त्रसिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त **"पाशुपतेय शिव यन्त्र"** स्थापित कर दें।

साधक स्नान कर काले वस्त्र धारण करे, मुंह पश्चिम दिशा की ओर होना चाहिये, अपने हाथ में जल ले कर संकल्प करे कि "मैं समस्त नियमों का पालन करता हुआ यह विशेष पाशुपतेय प्रयोग सम्पन्न करने का संकल्प लेता हूं, और मैं पूर्ण साधक बना रहूंगा।"

सर्वप्रथम **पाशुपतेय शिव यन्त्र** का पूजन करें, उस पर तथा शिवलिंग पर दूध मिश्रित जल चढावें तथा **"ॐ नमः शिवाय"** मन्त्र का उच्चारण करते रहें। उसके पश्चात् सिंहवाहिनी देवी की पूजा अबीर, गुलाल, कुंकुम, केसर, मौली, सुपारी, अक्षत से सम्पन्न करें, तथा देवी यन्त्र एवं चित्र के चारों ओर कुंकुम से चावल रंग कर एक गोल घेरा बना दें, तत्पश्चात् मन्त्र जप अनुष्ठान प्रारम्भ करें, प्रति रात्रि ११ माला मन्त्र जप अनिवार्य है, और इस प्रकार ११ दिन तक निरन्तर बिना व्यवधान के अनुष्ठान सम्पन्न कर १२१ माला मन्त्र जप सम्पन्न करना है।

विशेष—शिव साधना के इस अनूठे पाशुपतेय प्रयोग का मन्त्र जप केवल विशिष्ट **शिव शक्ति भ्रमराम्बा रुद्राक्ष माला** से ही सम्पन्न करना है, छोटे रुद्राक्ष दानों की इस माला का प्रयोग भविष्य में भी केवल शिव-साधना हेतु ही प्रयोग में लेना है।

मन्त्र

ॐ आं ह्रीं सौं ऐं क्लीं हूं सौः ग्लौं क्रों एहि एहि भ्रमराम्बा हि सकलजगन्मोहनाय मोहनाय सकलाण्डजपिण्डजान् भ्रामय भ्रामय राजा प्रजा-वशकरि संमोहय संमोहय महामाये अष्टादश-पीठरूपिणि अमलवरयूं स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर कोटिसूर्यप्रभा-भासुरि चन्द्रजटी मां रक्ष रक्ष मम शत्रून् भस्मीकुरु भस्मीकुरु विश्वमोहिनी हुं क्लीं हुं हुं फट् स्वाहा ॥

मन्त्र जप के पश्चात् पूजा में किसी प्रकार के दोष हेतु क्षमा मांगते हुए शिव और दुर्गा दोनों की आरती सम्पन्न करें।

इस प्रकार जब ११ दिन पूर्ण हो जाते हैं, तो साधक को एक दिव्य शक्ति का अनुभव होता है, और भगवान शंकर साधक की भक्ति से प्रसन्न होकर उसे अदृश्य पाशुपतेय अस्त्र प्रदान करते हैं।

एक बार साधना पूर्ण विधि-विधान सहित सम्पन्न करने पर कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी यदि साधक एक बार उपरोक्त पाशुपतेय मन्त्र का उच्चारण कर लेता है तो उसे उस विपरीत परिस्थितियों में भी मार्ग मिल जाता है, शिवरूपा मां भ्रमराम्बा प्रत्यक्ष उसे सहयोग प्रदान करती है।

यह प्रयोग और मन्त्र गोपनीय है, अतः कमजोर चित्तवाले तथा श्रद्धाहीन व्यक्तियों को इस प्रकार की साधना वर्जित है।

वस्तुतः यह शिव रक्षा प्रयोग अद्भुत और शीघ्र तथा निश्चित फलदायक है। ●

आपत्ति उद्धारक

बटुक भैरव प्रयोग

एक बार क्यों ?

बार-बार आजमाइये

हर बार

तत्काल प्रत्यक्ष फल प्राप्ति निश्चित है

लौकिक और पारलौकिक शक्तियों के द्वारा मानव जीवन में सफलताएं पाई जा सकती हैं, लौकिक शक्ति जहां अस्थिर रहती है, वहीं पारलौकिक शक्ति हर पल हर क्षण मनुष्य के साथ रहती है।

पारलौकिक शक्ति प्राप्त करने का स्रोत देवताओं की साधना ही है, इसमें भी दुर्गा या भैरव साधना तुरन्त तत्क्षण फल देने वाली मानी गई है, भैरव भगवान शिव के अवतार हैं, विष्णु के अंश हैं, शक्ति के आद्य हैं, अतः शाक्त, वैष्णव, शैव कोई भी मतावलम्बी इस साधना को कर सकता है।

गृहस्थ साधकों के लिए पहली बार प्रामाणिक अचूक, गोपनीय सरल एवं शीघ्र सिद्धिप्रद साधना का स्पष्ट विवरण—

जीवन में सुख और दुःख आते ही रहते हैं, जहां आदमी सुख प्राप्त होने पर प्रसन्न होता है वहीं दुःख आने पर वह घोर चिन्ता और परेशानियों से घिर जाता है, परन्तु धैर्यवान व्यक्ति ऐसे क्षणों में भी शान्त चित्त होकर उस समस्या का निराकरण कर लेते हैं।

कलियुग में पग-पग पर मनुष्य को बाधाओं, परेशानियों और शत्रुओं से सामना करना पड़ता है, ऐसी स्थिति में उसके लिए मन्त्र साधना ही एक ऐसा मार्ग रह जाता है जिसके द्वारा वह शत्रुओं और समस्याओं पर पूर्ण विजय प्राप्त कर सकता है, इस प्रकार की साधनाओं में

"आपत्ति उद्धारक बटुक भैरव साधना" अत्यन्त ही सरल, उपयोगी और अचूक फलप्रद मानी गई है, कहा जाता है कि भैरव साधना का फल हाथों-हाथ प्राप्त होता है।

भैरव को भगवान शंकर का ही अवतार माना गया है, शिव महापुराण में बताया गया है—

भैरवः पूर्णरूपो हि शंकरः परात्मनः।
मूढास्ते वै न जानन्ति मोहिता शिवमायया॥

देवताओं ने भैरव की उपासना करते हुए बताया है कि काल की भांति रौद्र होने के कारण ही आप **'कालराज'** हैं, भीषण होने से ही आप **'भैरव'** हैं, मृत्यु भी आप से भयभीत रहती है, अतः आप काल भैरव हैं, दुष्टात्माओं का मर्दन करने में आप सक्षम हैं, इसलिए आपको **'आमर्दक'** कहा गया है, आप समर्थ हैं और शीघ्र ही प्रसन्न होने वाले हैं।

आपद-उद्धारक बटुक भैरव

'शक्ति संगम तन्त्र' के **'काली खण्ड'** में भैरव की उत्पत्ति के बारे में बताया गया है कि **'आपद'** नामक राक्षस कठोर तपस्या कर अजेय बन गया था, जिसके कारण सभी देवता त्रस्त हो गये, और वे सभी एकत्र होकर इस आपत्ति से बचने के बारे में उपाय सोचने लगे, अकस्मात् उन सभी के देह से एक-एक तेजो धारा निकली और उसका युग्म रूप पंचवर्षीय बटुक का प्रादुर्भाव हुआ, इस बटुक ने **'आपद'** नामक राक्षस को मारकर देवताओं को संकट मुक्त किया, इसी कारण इन्हें 'आपदुद्धारक बटुक भैरव' कहा गया है।

'तन्त्रालोक' में भैरव शब्द की उत्पत्ति **भैभीमादिभिः अवतीति भैरेव** अर्थात् भीमादि भीषण साधनों से रक्षा करने वाला भैरव है, **'रुद्रयामल तन्त्र'** में दस महाविद्याओं के साथ दस भैरव के रूपों का वर्णन है, और कहा गया है कि कोई भी महाविद्या तब तक सिद्ध नहीं होती जब तक उनसे सम्बन्धित भैरव की सिद्धि न कर ली जाय।

'रुद्रयामल तन्त्र' के अनुसार दस महाविद्याएं और सम्बन्धित भैरव नाम इस प्रकार हैं—

१-	कालिका	महाकाल भैरव
२-	त्रिपुर सुन्दरी	ललितेश्वर भैरव
३-	तारा	अक्षभ्य भैरव
४-	छिन्नमस्ता	विकराल भैरव
५-	भुवनेश्वरी	महादेव भैरव
६-	धूमावती	काल भैरव
७-	कमला	नारायण भैरव
८-	भैरवी	बटुक भैरव
९-	मातंगी	मतंग भैरव
१०-	बगलामुखी	मृत्युंजय भैरव

भैरव से सम्बन्धित कई साधनाएं प्राचीन तान्त्रिक ग्रन्थों में वर्णित हैं, जैन ग्रन्थों में भी भैरव के विशिष्ट प्रयोग दिये हैं, प्राचीनकाल से अब तक लगभग सभी ग्रन्थों में एक स्वर से यह कहा गया है कि जब तक साधक भैरव साधना सम्पन्न नहीं कर लेता, तब तक उसे अन्य साधनाओं में प्रवेश करने का अधिकार ही नहीं प्राप्त होता।

'शिव पुराण' में भैरव को शिव का ही अवतार माना है तो **'विष्णु पुराण'** में बताया गया है कि विष्णु का अंश ही भैरव के रूप में विश्व विख्यात है, दुर्गा सप्तशती के पाठ के प्रारम्भ और अन्त में भी भैरव की उपासना आवश्यक और महत्वपूर्ण मानी जाती है।

भैरव साधना के बारे में लोगों के मानस में काफी भ्रम और भय है परन्तु यह साधना अत्यन्त ही सरल, सौम्य और सुखदायक है, इस प्रकार की साधना को कोई भी साधक कर सकता है।

भैरव साधना के बारे में कुछ मूलभूत तथ्य साधक को जान लेना चाहिये—

१- भैरव साधना सकाम्य साधना है अतः कामना के साथ ही इस प्रकार की साधना की जानी चाहिए।

२- भैरव साधना रात्रि में ही की जानी चाहिए, दिन में साधना करने का निषेध है।

३- भैरव को सुरा पान कराना आवश्यक है।

४- भैरव की पूजा में दैनिक नैवेद्य बदलता रहता है। रविवार को दूध की खीर, सोमवार को मोदक (लड्डू), मंगलवार को घी-गुड़ एवं घी से बनी हुई लपसी, बुधवार को दही भूरा, गुरुवार को बेसन के लड्डू, शुक्रवार को भुने हुये चने तथा शनिवार को उड़द के बने हुए पकौड़े का नैवेद्य लगाते हैं, इसके अतिरिक्त जलेबी, सेव तले हुए पापड़ आदि।

साधना के लिए आवश्यक

ऊपर लिखे गये नियमों के अलावा कुछ अन्य नियमों की जानकारी साधक के लिए आवश्यक है, जिनका पालन किये बिना भैरव साधना पूरी नहीं हो पाती।

१- भैरव की पूजा में अर्पित नैवेद्य प्रसाद को उसी स्थान पर पूजा के कुछ समय बाद ग्रहण करना चाहिए, इसे पूजा स्थान से बाहर नहीं ले जाया जा सकता, सम्पूर्ण प्रसाद उसी समय पूर्ण कर देना चाहिए।

२- भैरव साधना में केवल तेल के दीपक का ही प्रयोग किया जाता है, इसके अतिरिक्त गुंगल, धूप-अगरबत्ती जलाई जाती है।

३- इस महत्वपूर्ण साधना हेतु मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त **"बटुक भैरव यन्त्र"** तथा **'चित्र'** आवश्यक है, इस ताम्र यन्त्र तथा चित्र को स्थापित कर साधना क्रम प्रारम्भ करना चाहिए।

४- भैरव साधना में केवल **'काली हकीक माला'** का ही प्रयोग किया जाता है।

साधना विधान

साधक रात्रि को स्नान कर दक्षिण की तरफ मुंह कर बैठ जाय, सामने तेल का दीपक लगा लें और भैरव के चित्र, मूर्ति तथा यन्त्र के सामने निम्न ध्यान करें—

बटुक भैरव ध्यान

भक्त्या नमामि बटुकं तरुणं त्रिनेत्रं
कामप्रदान् नरकपालत्रिशूलदण्डान्।
भक्तार्तिनाशकरणे दधतं करेषु
तं कौस्तुभामरणभूषितदिव्यदेहम्॥

फिर इस प्रकार ध्यान कर भैरव से मन्त्र साधना या मन्त्र जप की आज्ञा मांगें।

बटुक भैरव मन्त्र

॥ ॐ ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु
बटुकाय ह्रीं ॐ स्वाहा॥

यह इक्कीस अक्षरों का मन्त्र अत्यन्त ही महत्वपूर्ण माना गया है, और केवल मात्र नित्य एक माला जपने से ही एक महीने में साधक की इच्छा पूर्ति हो जाती है।

इसके अलावा भी बटुक भैरव के कई प्रयोग हैं—

१- रक्षा प्राप्ति के लिए मन्त्र

किसी भी मंगलवार को रात्रि के एक प्रहर बाद निम्न मन्त्र की ग्यारह माला जप करें।

मन्त्र

॥ ॐ ह्रीं भैरव भैरव भयकरहर मां रक्ष रक्ष
हुं फट् स्वाहा॥

२- वशीकरण प्रयोग मन्त्र

साधक यदि गुरुवार को प्रातःकाल या सूर्यास्त के समय नदी के किनारे या जंगल में जाकर निम्न मन्त्र का दस हजार जप करे तो वह जिसको भी चाहे वश में कर सकता है—

मन्त्र

ॐ नमो बटुक भैरवाय कामदेवाय यस्य यस्य दृश्यो भवामि यश्च यश्च मम सुखं तं तं मोहयतु स्वाहा ।।

३- मारण प्रयोग

मंगलवार को अर्धरात्रि के समय चौराहे पर जाकर उपरोक्त मन्त्र का दस हजार जप करें, तथा घी, खीर, लाल चन्दन मिला कर दशांश हवन करें, तो निश्चय ही शत्रु का नाश होता है ।

मन्त्र

ॐ नमः कालरूपाय बटुक भैरवाय अमुकं भस्म कुरु कुरु स्वाहा ।।

४- दरिद्रता नाश प्रयोग

यह मन्त्र महत्वपूर्ण और "स्वर्णाकर्षण भैरव मन्त्र" कहा गया है, रात्रि को दक्षिण की तरफ मुंह कर तेल का दीपक लगाकर निम्न मन्त्र का दस हजार जप करें तो निश्चय ही घर में दरिद्रता का नाश हो जाता है ।

स्वर्णाकर्षण भैरव मन्त्र

ॐ ऐं क्लीं क्लीं क्लूं ह्रां ह्रीं ह्रूं सः वं आपदुद्धरणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षण भैरवाय मम दारिद्रय विद्वेषणाय ॐ ह्रीं महाभैरवाय नमः ।

वस्तुतः भैरव प्रयोग अत्यन्त सरल और सौम्य है तथा कलियुग में भैरव प्रयोग शीघ्र ही सफलतादायक माना गया है, कोई भी साधक भैरव प्रयोग करके अपनी कामनाओं की पूर्ति कर सकता है ।

अष्ट भैरव मंगलम्

आद्यो भैरव भीषणो निगदितः श्री कालराजः क्रमाद् श्री संहारक भैरवोऽप्यथ रू रूश्चोन्मत्तको भैरवः ।
क्रोधश्चण्ड-कपालभैरववरः श्री भूतनाथस्ततो हृष्टो भैरव मूर्तयः प्रतिदिनं दद्युः सदा मंगलम् ।।

—श्री शंकराचार्य

प्रथम भीषण भैरव, दूसरा कालराज भैरव, तीसरा संहारक भैरव, रूरू भैरव, उन्मत्तक भैरव, क्रोधदण्ड कपाल धारक भैरव, भूतनाथ भैरव, तथा हृष्ट भैरव, भैरव की ये अष्ट मूर्तियां हमारी सदैव मंगल करें ।

दीर्घायु, आरोग्य विधान

भगवान् महामृत्युंजय अनुष्ठान

जो शिव साधना का श्रेष्ठतम स्वरूप है

भगवान शंकर के जितने विविध रूप हैं, उतने विश्व में किसी देवता के नहीं मिलेंगे, यजुर्वेद में वे उग्र रुद्र रूप में हैं तो उपनिषद्-काल में कल्याणकारी आशुतोष शिव और शंकर के रूप में, पुराणों में उन्हें गिरिजापति बना कर श्रृंगार का देवता माना है तो वहीं वे विष-पान कर नीलकंठ के रूप में भी प्रचलित हुए, कहीं वे नटराज हैं तो कभी श्रृंगारी नायक ईश्वर।

इससे भी महत्वपूर्ण और श्रेष्ठतम रूप है अमृतवर्षी महामृत्युंजय का, शंकर के चिन्तन, मनन, पूजन और साधना से मृत्युभय को हमेशा के लिए समाप्त किया जा सकता है, इसीलिए मार्कण्डेय ऋषि ने कहा है **"चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः"** अर्थात् जब मैं चन्द्रशेखर के आश्रित हूं तो यम मेरा क्या बिगाड़ सकता है?

दीर्घायु एवं स्थायी आरोग्य प्रत्येक मानव के लिए परम आवश्यक है, इसके लिए वह प्रतिदिन प्रतिक्षण चिन्तित रहता है और विविध औषधियों तथा उपायों का सहारा लेता है, महामृत्युंजय साधना इस दृष्टि से सर्वोपरि है, जिससे साधक निरोग एवं दीर्घायु बना रहता है और उसका सारा जीवन हंसते-हंसते व्यतीत हो जाता है।

अथर्ववेद के अनुसार परम ब्रह्म का आविर्भाव हुआ ब्रह्मा ने सृष्टि का निर्माण किया, जब समस्त लोक प्राणियों की अधिकता से भर गये और श्वास लेने में भी बाधा उपस्थित होने लगी तो ब्रह्मा जी के नेत्रों से प्रचण्ड अग्नि उत्पन्न हुई और वह प्राणियों को जलाने लगी, ऐसी स्थिती में भगवान् शिव ने ब्रह्मा जी से उस अग्नि के संवरण की प्रार्थना की जिसके परिणाम स्वरूप उन्होंने क्रोधाग्नि को अन्तरात्मा में लीन कर लिया, उस समय प्राणियों के जन्म-मरण की व्यवस्था के लिए मृत्यु को जन्म दिया, मृत्यु के द्वारा कार्य करने का आदेश मांगने

पर उसे समय-समय पर प्राणियों के संहार का आदेश मिला, इससे मृत्यु चिन्तित होकर रो पड़ी, उसने अपने आंसू दोनों हाथों में ले लिये, आगे चल कर वे आंसू ही रोग बन और जब प्राणियों की मृत्यु आती है, वह रोगों से प्रेरित होकर मर जाता है।

मृत्यु तो एक दिन सब की होती ही है, क्योंकि "जातस्य हि ध्रुवो मृत्यु:" **के अनुसार जो पैदा होता है उसकी मृत्यु निश्चित है; किन्तु मृत्यु असमय में न हो, इसके लिए ऋषि मुनियों ने सिद्धि प्राप्त कर कुछ ऐसे उपाय ढूंढ़ निकले हैं, जिसके द्वारा अकाल मृत्यु को टाला जा सकता है, इन उपायों में सर्वश्रेष्ठ उपाय महा-मृत्युंजय साधना मानी गई है।**

अमृत दाता महामृत्युंजय

भगवान् शंकर विष को पचाकर अमृत को प्रदान करने वाले हैं, उनके विविधि रूपों में महामृत्युंजय रूप सर्वश्रेष्ठ एवं प्रभावकारी कहा गया है—

मृत्युंजय जपं नित्यं यः करोति दिने दिने।
तस्य रोगाः प्रणश्यन्ति दीर्घायुस्च प्रजायते ।।

अर्थात् जो प्रतिदिन महामृत्युंजय मन्त्र का जप करता है, उसके सभी रोग नष्ट हो जाते हैं, और अकाल मृत्यु को हटाकर दीर्घायु प्राप्त करता है।

इसीलिए **रुद्रयामल** ग्रन्थ में कहा गया है—

मृत्युंजयस्य मन्त्रं वै जपते यदि मानुषः।
कोटि वर्ष शतं स्थित्वा लीनो भवति ब्रह्मणि ।।

अर्थात् जो मनुष्य महामृत्युंजय का एक बार भी जप नित्य करता है, वह पूर्ण आयु प्राप्ति करके अन्त में भगवान शिव में ही विलीन हो जाता है।

पारद शिवलिंग स्थापना

महामृत्युंजय भगवान शिव का साक्षात् स्वरूप पारद शिवलिंग में स्थित है, और जिसके घर में, पूजा स्थान में पारद शिवलिंग स्थापित नहीं है, वे दुर्भाग्यशाली ही कहे जा सकते हैं, इस विशेष साधना में **पारद शिवलिंग** तथा **तीन मधुरूपेण रुद्राक्ष** आवश्यक हैं इसके अतिरिक्त साधना में साधक पूर्ण भक्ति से साधना प्रारम्भ करें, अपने सामने पारद शिवलिंग स्थापित कर, तीनों मधुरूपेण रुद्राक्ष सामने रखें और फिर दोनों हाथों की अंजलि में पुष्प लेकर भगवान शिव का ध्यान करें।

हस्ताभ्यां कलशद्वयामृतरसैराप्लावयन्तं शिरो,
द्वाभ्यां तौ दधतं मृगाक्षवलये द्वाभ्यां वहन्तं परम्।
अंकन्यस्तकरद्वयामृतघटं कैलाशकान्तं शिवं,
स्वच्छाम्भोजगतं नवेन्दुमुकुटं देवं त्रिनेत्रं भजे ।।

अर्थात् दो हाथों से दो अमृत घटों द्वारा अपने सिर पर अभिषेक करते हुए अन्य दो हाथों से मृग चर्म तथा अक्ष माला को धारण किये हुए और अन्य दो हाथों में अमृत से परिपूर्ण दो कुम्भ अपनी गोद में रखे हुए कैलाश पर्वत के समान गौर वर्ण, स्वच्छ कमल पर विराजमान नवीन चन्द्रमायुक्त मुकुट वाले, त्रिनेत्र, भगवान मृत्युंजय शिव का मैं स्मरण करता हूं।

इसके बाद हाथ में जल ले कर विनियोग करें—

विनियोग

अस्य श्री त्र्यम्बक मन्त्रस्य वशिष्ठ ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः त्र्यम्बक पार्वति पतिर्देवता त्रं बीजं बं शक्तिः कं कीलकं मम सर्व रोग निवृत्तये सर्व कार्य सिद्धये अकालं मृत्यु निवृत्तये महामृत्युंजय त्र्यम्बक मन्त्रं जपे विनियोगः ।।

तत्पश्चात् हाथ का जल भूमि पर छोड़ दें।

ऋष्यादिन्यास

ॐ वशिष्ठ ऋषये नमः (शिरसि)
ॐ अनुष्टुप् छन्दसे नमः (मुखे)
ॐ त्र्यम्बकं देवतायै नमः (हृदये)
ॐ त्रं बीजाय नमः (गुह्ये)
ॐ बं शक्तये नमः (पादयोः)
ॐ कं कीलकाय नमः (नाभौ)
ॐ विनियोगाय नमः (सर्वांगे) ।।

करन्यास

ॐ त्र्यम्बकं (अंगुष्ठाभ्यां नमः)
ॐ यजामहे (तर्जनीभ्यां नमः)
ॐ सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् (मध्यमाभ्यां नमः)
ॐ उर्वारुकमिव बन्धनात् (अनामिकाभ्यां नमः)
ॐ मृत्योर्मुक्षीय (कनिष्ठिकाभ्यां नमः)
ॐ मामृतात् (करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः)

हृदयन्यास

ॐ त्र्यम्बकं (हृदयाय नमः)
ॐ यजामहे (शिरसे स्वाहा)
ॐ सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् (शिखायै वषट्)
ॐ उर्वारुकमिव बन्धनात् (कवचाय हुं)
ॐ मृत्योर्मुक्षीय (नेत्र त्रयाय वौषट्)
ॐ मातृतात् (अस्त्राय फट्)

जप के लिए मूल मन्त्र

महर्षि वशिष्ठ ने महामृत्युंजय मन्त्र को ३३ अक्षर का बताया है, जो उनके अनुसार ३३ देवताओं और दिव्य शक्तियों के द्योतक हैं, इन ३३ देवताओं में हैं—

आठ वसु, ग्यारह रुद्र, बारह आदित्य, एक प्रजापति एवं एक वषट्कार।

ये तैतीस देवता प्राणियों के शरीर के भिन्न-भिन्न अंगों में स्थित हैं, इस मन्त्र के जप से ये सभी शक्तियां शरीर में चैतन्य होकर प्राणी की रक्षा करती हैं और शरीरगत निर्बलता, मृत्यु तथा रोगों को समाप्त करती हैं।

महामृत्युंजय मन्त्र

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

इस मन्त्र का एक लाख जप होना आवश्यक है, जप पूरा होने के बाद दशांश हवन करना चाहिए, जिनमें १-बिल्व, २-खैर, ३-वट, ४-तिल, ५-सरसों, ६-खीर, ७-दूध, ८-दही, ९-पलास और १०-दूर्वा, इन दस द्रव्यों को घी में डुबो कर मूल मन्त्र बोलकर आहुति दी जानी चाहिए और अन्त में जिस रोगी के लिए जप किया जाय, उस पर इसी मन्त्र से हवन का दसवां अंश अभिषेक करना चाहिए।

जब प्राण अत्यन्त संकट में हो

जीवन में अचानक दुर्घटना आ सकती है, या कोई विशेष आपत्ति, परेशानी, बाधा, राजभय, बीमारी या कष्ट अनुभव हो तब शुक्राचार्य प्रणीत मृतसंजीवनी विद्या से प्रेरित महामृत्युंजय मन्त्र का जप करना चाहिए, यह **"मृतसंजीवनी महामृत्युंजय मन्त्र"** कहा जाता है—

मृतसंजीवनी महामृत्युंजय मन्त्र

ॐ ह्रौं ॐ जूं ॐ सः ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्विवर्धनम् उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॐ स्वः ॐ भुवः ॐ भूः ॐ सः ॐ जूं ॐ ह्रौं ॐ।

यह ६२ अक्षरों का शुक्राराधित महामृत्युंजय मन्त्र संसार का अमोघ मृत्युभय नाश करने वाला मन्त्र कहा गया है।

मृतसंजीवनी विद्या

पुराणों में प्रसिद्ध है, कि महर्षि शुक्राचार्य को अमृत सिद्धि प्राप्त थी, यह मृतसंजीवनी विद्या मृत्युंजय मन्त्र एवं गायत्री मन्त्र के योग से बना है, इसका स्वरूप इस प्रकार है—

मृतसंजीवनी मन्त्र

ॐ ह्रौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ तत्सवितुर्वरेण्य त्र्यम्बकं यजामहे भर्गो देवस्य धीमहि सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् धियो योनः प्रचोदयात् उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं ह्रौं ॐ॥

किसी भी मन्त्र की साधना में विनियोग करन्यास, ध्यान आदि पूर्ववत् ही होंगे। ●

दीक्षा क्यों ?

दीक्षा प्राप्त करने के पश्चात् ही साधक, शिष्य बन पाता है, उसके पहले तो अपने कार्यों हेतु, अपनी साधना हेतु साधक स्वयं जिम्मेदार होता है, ज्यों ही वह दीक्षा ग्रहण करता है त्यों ही उसकी जिम्मेदारी समाप्त हो जाती है, जीवन में आध्यात्मिक और साधनात्मक उन्नति के सम्बन्ध में दीक्षा के पश्चात् जिम्मेदारी गुरु की बढ़ जाती है, कि किस प्रकार क्रमबद्ध और व्यवस्थित रूप से शिष्य के जीवन को तराशा जाय, सुन्दर बनाया जाय, इसीलिए शास्त्रों में वर्णित है—**"एक गुरु, एक मन्त्र ही जीवन की सर्वश्रेष्ठ पवित्रता है ।"**

गुरु.....................

स्वामी बोधिराज मां काली के परम भक्त, तपस्वी, योगी और साधक रहे हैं, मां काली के साक्षात् दर्शन के लिए इन्होंने आबू के पहाड़ों में **सिद्ध पीठ** स्थान पर घोर तपस्या की, लगभग एक वर्ष तो मात्र पत्तों पर ही जीवन यापन किया, पर मां काली के दर्शन तो दूर, आभास तक भी नहीं हुआ ।

पर बोधिराज विचलित नहीं हुए, और सर्वथा निराहार रह कर भी काली की साधना करने लगे, पर पूरा वर्ष बीतने पर भी उन्हें क्षणिक आभास भी नहीं हुआ, तो वे विचलित हो गये और मां काली की मूर्ति के सामने ही आत्महत्या को उतारू हो गये ।

तभी उन्हें वहां सिंह की हुंकार सी सुनाई दी,—"जब तक तू दीक्षित नहीं होगा, गुरु धारण नहीं करेगा, तब तक मां काली के दर्शन कैसे सम्भव है ?"

बोधिराज को अपनी गलती का एहसास हो गया, वे शास्त्र विरुद्ध चल रहे थे, बिना दीक्षित हुए साधना में सफलता मिल भी कैसे सकती है ?

और उसी दिन बोधिराज विश्ववंद्य साधक योगीराज प्रज्ञानन्द के चरणों में पहुंच गये और दीक्षा प्राप्त की ।

इतिहास साक्षी है, कि दूसरे ही दिन साधना स्थल पर बैठते ही मां काली के भव्य दर्शन हो गये.......... साक्षात् सशरीर.......... सतेज !

और बोधिराज गद्गद् हो उठे, भाव विह्वल हो गये........, आगे चल कर इन्हीं बोधिराज ने "काली विग्रहार्चन" साधना पद्धति ढूंढ़ निकाली, जिसके अनुसार साधना करने से मां काली के साक्षात् दर्शन सुलभ हो जाते हैं । ●

विश्व की श्रेष्ठ, सिद्धिदायक, धनदायक प्रत्यक्ष साधना

तारा साधना

परास्बा भगवती जगत् जननी मां तारा जीवन के समस्त पुरुषार्थों —धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को देने वाली है, दस महाविद्याओं में से मां तारा की साधना प्रमुख मानी गई है, जीवन में आर्थिक, भौतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति के लिए तारा साधना सर्वोत्कृष्ट कही गई है।

पत्रिका परिवार के सदस्यों के लिए तो यह लेख अत्यन्त महत्वपूर्ण है, उन्हें व्यक्तिगत निर्देश पूज्य गुरुदेव से प्राप्त हो सकते हैं, और साधनाएं तो उनका आशीर्वाद ही…………

संसार में जितनी भी साधनाएं हैं, उनमें मां तारा साधना महत्वपूर्ण और प्रमुख मानी गई है, जो अपने जीवन में तारा साधना सम्पन्न करता है, उसे आर्थिक दृष्टि से किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता।

तारा साधना कोई भी साधक कर सकता है, इसमें पुरुष या स्त्री का कोई भेद नहीं माना जाता, पूर्णविधि से इस साधना को सम्पन्न करने पर मानव की जो इच्छाएं होती हैं, वे पूर्ण हो जाती हैं।

कई साधकों ने यह अनुभव किया है, कि तारा साधना सम्पन्न करने के बाद आर्थिक व्यापारिक दृष्टि से उन्हें विशेष सफलता मिलने लगी है, और कुछ साधकों को तो मां तारा स्वयं उसके सिरहाने नित्य दो तोला स्वर्ण रख देती है, जिससे कि उसके जीवन में कभी भी दरिद्रता व्याप्त न हो।

साधना करने पर मां तारा के साक्षात् दर्शन भी सुलभ होते हैं, और इस प्रकार वह साधक अपने जीवन में परास्बा के दर्शन कर अपने आपको कृतकृत्य अनुभव करता है।

साधना समय

तारा साधना किसी भी महीने के शुक्ल पक्ष की प्रतिप्रदा से प्रारम्भ की जा सकती है, साधना को प्रारम्भ करने का शुभ समय प्रातः ६ बजे से लगा कर ८ बजे के बीच है, प्रातःकालीन समय शुभ साधनाओं के लिए श्रेष्ठ रहता है, शुद्ध मन से अपने जीवन में कुछ विशेष करने की भावना के साथ ही साधना का प्रारम्भ करना चाहिए।

उपकरण

साधना में गुलाबी रंग की प्राधान्यता दी गई है, अतः साधक साधनाकाल में लाल या गुलाबी रंग की धोती पहने तथा गुलाबी रंग की ही धोती ओढ़ ले, यदि महिला साधिका हो तो उसे भी गुलाबी साड़ी ही धारण करनी चाहिए।

साधना से पूर्व ही रुई को गुलाबी रंग में रंगकर तथा उसे सुखा कर रख देनी चाहिए, साथ ही प्रतिपदा के दिन प्रातः साधक को उत्तर की तरफ मुंह करके बैठ जाना चाहिए, अपने सामने लकड़ी का एक पट्टा रख देना

और उस पर गुलाबी कपड़ा बिछाना चाहिए, इस पट्टे पर गुलाबी रंगे हुए चावलों की सात ढेरियां बनाकर रख देनी चाहिए, ये चावल पहले से ही गुलाबी रंग में रंगकर सुखाकर रखने चाहिए, सातों ढेरियां बांएं से दाएं एक ही सीध में हों तथा प्रत्येक ढेरी पर एक लौंग रख देना चाहिए।

इसके बाद सामने ढेरियों के एक तरफ मां भगवती **"तारा का चित्र एवं यन्त्र"** स्थापित करना चाहिए, ढेरियों के दूसरी तरफ दीपक लगा लेना चाहिए, इसमें शुद्ध घी का प्रयोग किया जाता है।

साधक गुलाबी रंग का आसन बिछा कर बैठे, आसन सूती या ऊनी किसी प्रकार का हो सकता है।

एक बात का ध्यान रखें कि साधना प्रारम्भ करने से पूर्व जिस कमरे में साधना कर रहे हों, उस कमरे की दीवारों को गुलाबी रंग से रंगवा देनी चाहिए, कमरे की छत और फर्श भी गुलाबी रंग से रंगा हो, यदि ऐसा संभव न हो तो कमरे में चारों तरफ दीवारों पर तथा ऊपर भी गुलाबी रंग का कागज चिपका देना चाहिए, यदि कमरे में बिजली की रोशनी हो तो लट्टू या बल्ब भी गुलाबी या लाल रंग का ही होना चाहिए।

कहने का तात्पर्य है कि पूरा कमरा गुलाबी रंग से ही पुता होना चाहिए, यह कार्य साधना प्रारम्भ करने के एक या दो दिन पहले सम्पन्न कर लेना चाहिए।

साधना विधि

सर्वप्रथम साधक गुरु के चित्र या उसकी मूर्ति की पूजा करे, और उनसे प्रार्थना करे, कि साधना में सफलता प्राप्त हो, इसके बाद गणपति के चित्र या मूर्ति को प्रणाम कर याचना करे कि उसकी साधना निर्विघ्न सम्पन्न हो।

इसके बाद साधक हाथ में जल लेकर संकल्प करे—

"मैं **(अपना नाम उच्चारण करे)** भगवती तारा साधना सम्पन्न करना चाहता हूं और अष्टमी पर्यन्त सवा लाख मन्त्र जप सम्पन्न करूंगा, मैं यह साधना घर में सुख शान्ति एवं आर्थिक उन्नति के लिए कर रहा हूं, मुझे भगवती तारा प्रत्यक्ष दर्शन दें।"

ऐसा बोल कर हाथ का जल पात्र में छोड़ दें।

पूजन

इसके बाद साधक भगवती तारा के चित्र व यन्त्र का पूजन करे, पूजन में कोई विशेष जटिलता या विधि-विधान नहीं है, यन्त्र को जल से स्नान कराकर उस पर कुंकुम लगावे गुलाबी पुष्प समर्पित करे, तथा मां तारा का भी इसी प्रकार गुलाबी पुष्पों से पूजन करे।

मन्त्र जप

आठ दिन में सवा लाख मन्त्र जप करने होते हैं, इसलिए नित्य सोलह हजार मन्त्र जप होने चाहिए, इस प्रकार आठ दिन में एक लाख अट्ठाईस हजार जप हो जायेगा, इसमें सवा लाख आवश्यक है ही, तीन हजार मन्त्र जप इसलिए अतिरिक्त हो जाता है, जिससे कि कोई भूल चूक हो गई हो तो क्षम्य हो।

'तारा तान्त्रोक्त माला' का प्रयोग श्रेष्ठ माना गया है, माला में १०८ दाने होने चाहिए।

तारा ध्यान

सर्व प्रथम मां तारा को दोनों हाथों से प्रणाम कर निम्नलिखित ध्यान मन्त्र का उच्चारण करें—

ध्यान मन्त्र

प्रत्यालीढपदार्प्पिताङ्घ्रिशवहृद्घोराट्टहासापरा खड्गेन्दीवरकर्त्रिखर्प्परभुजाहुंकारबीजोद्भवा। खर्व्वा नीलविशालपिंगलजटाजूटैकनागैर्युता। जाड्यन्न्यस्य कपालकर्तृ जगतां हन्त्युग्रतारा स्वयम्॥

अर्थात् मां तारा महाविद्या है, जो नरमुण्डों को धारण किये हुए हैं, जिसके सिर पर भी नरमुण्डों का ताज पहना हुआ है, उसके चार हाथ हैं, कलाइयों पर सर्प लपेटे हुए हैं, और वह दरिद्रता रूपी शत्रु पर पांव रखकर खड़ी है, ऐसी ही तारा को मैं भक्ति-भाव से प्रणाम करता हूं।

इसके बाद बेसन की बनी हुई किसी मिठाई का भोग लगा दिया जाय, यह मिठाई नित्य घर पर ही बनी हो,

बाजार की बनी हुई मिठाई या प्रसाद का उपयोग न किया जाय।

इसके बाद निम्न सात अक्षरों के मन्त्र का जप प्रारम्भ कर दिया जाय—

तारा मन्त्र

।। ऐं ओं ह्रीं क्रीं हुं फट् ।।

यह मन्त्र अपने आप में चैतन्य एवं प्राणदायक है, साधक को निरन्तर इस मन्त्र का जप करना चाहिए, मन्त्र जप करते समय दीपक लगा रहना चाहिए।

साधनाकाल में ध्यान रखने योग्य तथ्य

- यह साधना दिन को या रात्रि को सम्पन्न की जा सकती है, यदि प्रातः काल पूजन करे तो दिन भर में सोलह हजार मन्त्र जप कर लेने चाहिए, यदि साधक चाहे तो प्रातः संक्षिप्त पूजन कर मन्त्र जप कर सकता है, और रात्रि को पुनः पूजन कर अपने काम पर जा सकता है, परन्तु साधक को यह ध्यान रखना चाहिए, कि या तो वह दिन को ही पूरा मन्त्र जप करे या रात्रि को ही।
- नित्य सोलह हजार मन्त्र जप आवश्यक है, गिनती के लिए किसी भी वस्तु का प्रयोग किया जा सकता है।
- यह साधना पुरुष या स्त्री कोई भी कर सकता है, पर साधना काल में रजस्वला समय हो जाय तो, स्त्री को साधना स्थगित कर देना चाहिए।
- साधना काल में स्त्री-संग, शराब, जुआ आदि व्यसन सर्वथा वर्जित हैं, तथा २४ घण्टों मे एक समय शुद्ध शाकाहारी भोजन करे, बाजार की बनी हुई किसी भी वस्तु या पदार्थ का सेवन वर्जित है।
- साधना में बैठने के बाद यदि साधक चाहे तो २१ मालाओं के मन्त्र जप के बाद पांच या दस मिनट का विश्राम ले सकता है, इस प्रकार प्रत्येक २१ मालाओं के बाद थोड़ा-थोड़ा विश्राम चाहे तो ले सकता है, पर बीच में उठे नहीं, यदि मल-मूत्र विसर्जन का दबाव हो जाय, तो साधक २१ मालाओं के बाद ऐसा कर सकता है, पर इसके बाद पुनः स्नान करके ही साधना में बैठ सकता है।

अनुभव

साधक जब साधना में बैठता है, तो तीसरे दिन उसे साधना कक्ष में सुगन्ध सी अनुभव होती है, यह सुगन्ध अपने आपमें अवर्णनीय होती है, पांचवे दिन उसे मधुर घुंघरुओं की आवाज सुनाई देती है और आठवें दिन जगत् जननी मां तारा के साक्षात् दर्शन हो जाते हैं, इसके लिए अखण्ड श्रद्धापूर्ण विश्वास और विधि-विधान आवश्यक है।

साधना समाप्त होने के बाद जल्दी से जल्दी साधक की कामना पूर्ण होती है।

समापन

आठवें दिन सवा लाख मन्त्र जप पूरे हो जाते हैं, तब नवें दिन जमीन पर या किसी पात्र में अग्नि लगा कर तारा मन्त्र से बारह हजार पांच सौ आहुतियां देनी चाहिए इसमें मात्र शुद्ध घी का ही प्रयोग किया जाता है, प्रत्येक आहुतियों के साथ तारा मन्त्र का उच्चारण आवश्यक है।

यज्ञ की समाप्ति के बाद अपने परिजनों, मित्रों, सम्बन्धियों को बुलाकर भोजन कराना चाहिए, और इसके बाद ही स्वयं भोजन करे, तभी साधना सम्पन्न मानी जाती है, फिर यन्त्र और चित्र को पूजा घर में स्थापित कर ले, तथा लकड़ी के पट्टे पर जो चावल की ढेरियां व लौंग हो, उसे किसी ब्राह्मण को दान दे दे या नदी अथवा तालाब में विसर्जित कर दे।

वस्तुतः यह हमारा सौभाग्य है कि हमें इस प्रकार का सुयोग्य अवसर प्राप्त हुआ है, जबकि हम एक श्रेष्ठ साधना में संलग्न हो सकते हैं, पत्रिका पाठक और सिद्धाश्रम साधक परिवार इस अवसर का लाभ उठा कर जीवन को पूर्णता प्रदान कर सकते हैं। ●

सामग्री, जो आपकी साधनाओं में सहायक हैं

साधना प्रयोग	पृष्ठ संख्या	सामग्री नाम	न्यौछावर
गणपति ऋद्धि-सिद्धि अनुष्ठान	६	गणपति पंचानन यन्त्र (पांच यन्त्र)	२४२) रु०
कृत्या साधना	१३	कृत्या यन्त्र	१५०) रु०
		कृत्या माला	११०) रु०
पांच विशिष्ट प्रयोग—	१७	—	—
१-हनुमान साधना	१८	रक्तचन्दन की हनुमान मूर्ति	६०) रु०
२-कर्णपिशाचिनी साधना	१८	कर्णपिशाचिनी त्रिशूल	१२०) रु०
३-रोग मुक्त रुद्र प्रयोग	१६	महामृत्युंजय रुद्र यन्त्र	६०) रु०
		भगवान रुद्र का चित्र	१०) रु०
४-स्वप्नेश्वरी प्रयोग	१६	स्वप्नेश्वरी यन्त्र	१२०) रु०
		,, चित्र	२०) रु०
५-मणिभद्र प्रयोग	२०	मणिभद्र यन्त्र	१२०) रु०
		मूंगा माला	६०) रु०
मकर संक्रान्ति प्रयोग—	२१	—	—
– लक्ष्मी साधना	२३	सिंहवाहिनी महालक्ष्मी यन्त्र	१५०) रु०
		लक्ष्मी माला	१५०) रु०
– विष्णु नृसिंह साधना	२४	विष्णु नृसिंह महायन्त्र	११०) रु०
– सूर्य साधना	२६	सूर्य यन्त्र	१०५) रु०
		१२ सविता चक्र	६०) रु०
पाशुपतेय प्रयोग	२७	सिंहवाहिनी दुर्गा यन्त्र	१५०) रु०
		,, ,, चित्र	१०) रु०
		पाशुपतेय शिव यन्त्र	१४०) रु०
		शिव-शक्ति भ्रमराम्बा रुद्राक्ष माला	३००) रु०
बटुक भैरव प्रयोग	२६	बटुक भैरव यन्त्र	१३०) रु०
		बटुक भैरव चित्र	१०) रु०
		काली हकीक माला	११०) रु०
महामृत्युंजय प्रयोग	३३	पारद शिवलिंग	३००) रु०
		तीन मधुरूपेण रुद्राक्ष	६३) रु०
तारा साधना	३७	तारा यन्त्र	१५०) रु०
		,, चित्र	१५) रु०
		तारा तांत्रोक्त माला	१२०) रु०

गतिविधियां

'कस्तूरी' अपनी सुगंध की अनुभूति दूर ही से करा देती है, पूज्य गुरुदेव के व्यक्तित्व और संस्था के कार्यों ने अपनी सुगंध की अनुभूति देश-विदेश में कराई, फलस्वरूप सिद्धाश्रम साधक परिवार का विस्तार तो हुआ ही, और संस्था ने अन्तर्राष्ट्रीय रूप ग्रहण किया।

६ फरवरी १९८९ को उपराष्ट्रपति डॉ० शंकर दयाल शर्मा ने उपराष्ट्रपति भवन में, उन्हें उनके उत्कृष्ट कार्यों के लिए **"समाज शिरोमणि"** की उपाधि से अलंकृत किया।

आध्यात्मिक चेतना प्रसार तीव्र गति से हो, इस क्रम में सम्पन्न हुए कार्यों का विवरण अगली पंक्तियों में दिया जा रहा है—

पहली बार देश की सीमाओं के पार नेपाल की राजधानी काठमाण्डू में, शिवरात्रि के पर्व पर, एक भव्य पाशुपतास्त्रेय, शिविर पूज्य गुरुदेव के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ, इसमें वहां के प्रधान-मन्त्री **'श्री कृष्ण प्रसाद भट्टराई'** अपने अनेक मन्त्रियों सहित उपस्थित थे। ८ से १० मई तक १०८ कुण्डीय यज्ञ फरीदाबाद में पूज्य गुरुदेव के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ, वहां कुछ अतिविशिष्ट व्यक्ति श्री पूज्य गुरुदेव से आशीर्वाद प्राप्ति के लिए उपस्थित थे।

वासन्तीय नवरात्रि शिविर जोधपुर में १७ मार्च से २३ मार्च तक सम्पन्न हुआ, पूज्य गुरुदेव के मार्गदर्शन में साधकों ने उच्चकोटि की साधनाएं सम्पन्न कीं, १२ से १४ अप्रैल तक नारगोल (गुजरात) में समुद्र तट पर, मेष संक्रान्ति के पर्व पर पूज्य गुरुदेव की उपस्थिति में एक महत्वपूर्ण शिविर सम्पन्न हुआ, १९ से २१ अप्रैल तक पूज्य गुरुदेव के पावन जन्म दिवस के अमृत महोत्सव में साधकों ने आनन्द की अमृत गंगा में अवगाहन किया। २९ से ३१ मई कांगड़ा में **'देव दर्शन शिविर'** अनुपम और दिव्य रहा।

फिर आया १७ जुलाई का स्वर्णिम दिवस, जब दिल्ली के **कोहाट इनक्लेव** में गुरुधाम की स्थापना हुई और संस्था ने अन्तर्राष्ट्रीय रूप ग्रहण किया, और २३ से २५ जुलाई तक गुरु पूर्णिमा का पावन पर्व बैंगलोर में सम्पन्न हुआ।

और जोधपुर में ८ से १६ अक्टूबर तक हुए शारदीय नवरात्रि की बात निराली ही थी, साधना का सूर्य, नित्य यज्ञ, योग क्रियाएं, शिष्यों का अपार उत्साह सब कुछ अनुपम था, इसका छायांकन दूरदर्शन की टीम ने किया और प्रसारित भी हुआ।

रथ यात्रा

'निखिल ज्योति रथ' **गुरु संदेश, गुरु आशीर्वाद लिये, साधकों के घर-घर पहुंच कर, संस्था का शंखनाद करता रहा, हर स्थान पर पूजन कार्यक्रम, पत्रिका सदस्यों का उत्साह बढ़-चढ़ कर था, जनवरी में उत्तर प्रदेश के कुछ भाग में, नेपाल सिक्किम का भ्रमण किया, अप्रैल में गुजरात, मई में हिमाचल प्रदेश, जून-जुलाई में मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक में गया और नवम्बर-दिसम्बर में हरियाणा भ्रमण कर रहा है।**

रजि० नं० । ३५३०५/८१

पोस्टल एल०आर०जे० । ३६६७/८६-८७

नव-वर्ष की सौगात

प्राण तोषिणी अनुष्ठान

सन् १९९१ आपके लिए हर प्रकार की मीठी, आनन्दप्रद और कड़वी यादें लिए बीत रहा है, समाप्ति की ओर है, और सन् १९९२ अपने भीतर आनन्द, उमंग, उत्साह, जोश और महत्वांकाक्षाओं को समेटे उपस्थित हो रहा है।

गुरु आशीर्वाद का अमृत फल प्राण तोषिणी अनुष्ठान सम्पन्न करें।

नव वर्ष का प्रथम दिन बुधवार, द्वादशी को है और

यह दिवस आपके लिए महत्वपूर्ण है।

सर्वप्रथम गुरु पूजन सम्पन्न कर अपने हाथ में जल लेकर संकल्प करें और यह संकल्प आपको पूरी तरह निभाना है, उसके पश्चात् धारण करें— प्राण तोषिणी माला, यह माला विशेष रक्षात्मक मन्त्रों से आपूरित पूरे परिवार के लिए रक्षा कवच है, परिवार का प्रत्येक सदस्य यह माला धारण कर गुरु मन्त्र का जप करें, गुरु आरती सामूहिक रूप से सम्पन्न करें।

गुरु पूजन में परिवार के सभी सदस्यों के लिए इन मालाओं को अपने सामने रख दें, और पूरे कार्यक्रम के पश्चात् प्रत्येक सदस्य निम्न प्राण तोषिणी मन्त्र का जप इसी माला से कर अपने गले में धारण कर लें—

।। ॐ ऐं ह्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रे ह्रौं ह्रः जगन्मातः सिद्धि देहि देहि स्वयम्भू लिंगमाश्रितायै विद्युत् कोटि-प्रभायै महा-बुद्धि प्रदायै सहस्र दल गामिन्यै नमः ।।

यह नव वर्ष सौगात है, पूज्य गुरुदेव की ओर से शिष्यों, साधकों के लिए उनके पूरे परिवार के लिए।

नववर्ष शुभ कामनाएं!

प्राण तोषिणी माला न्यौछावर—६०)रु०